सर्वथा शुद्ध कर ली है
ता. 25-2-54
विद्या.

ओ३म्

महादानी
रक्तदान

(१म अध्याय से आरंभ)
पृष्ठ १ से ६२ तक

नं-1

लेखक- विद्याधर विद्यालङ्कार

the mailing list number and address to
2, Bhagwan Dass Road, New Delhi.

मुख्यपृष्ठ

VIDYALANKAR SERIES

"MAHA DAANI"

विद्यालङ्कार- आर्यभाषा- ग्रन्थमाला
(ग्रन्थ चौथा)

महादानी

(उपन्यास)

प्रकाशें → मूल लेखक — चार्ल्स गारविस Charls Garvis
अंग्रेजी ग्रन्थ — हार्ट टू हार्ट Heart to Heart
~~हिन्दी अनुवाद — महादानी~~

अनुवादक — कविराज विद्याधर विद्यालंकार
~~पो० सोलन (शिमला हिल्स)~~

पुस्तक मिलने का पता → ~~प्रकाशक~~

श्रीमती इन्दिरा आनन्द शारदा प्रकाशन, ३७/६, राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-५

मूल्य — पांच रुपये प्रथम संस्करण — ~~मई~~ मास : १९६.. ~~प्रथम संस्करण—मास १९६..~~

हमारी दो ग्रन्थमालाएं

सब को सूचित किया जाता है कि हमारी दो ग्रन्थमालाएं प्रकाशित हो रही हैं जिनमें संस्कृत तथा हिन्दी के ग्रन्थ छपवाये जाते हैं।

१. विद्यालङ्कार-आर्य-वाङ्मय रत्नमाला (संस्कृत)

इसमें संस्कृत के दुर्लभ ग्रन्थ ही छपवाये जाते हैं। अब तक इसमें निम्नलिखित ग्रन्थ छप चुके हैं —

१ – अनुग्राहकम् — मूल्य २) रु० – इसमें यज्ञों का फलादेश वर्णित है। महाभारत काल का है।

२ – माजुष प्रतिज्ञापरिशिष्टम् — मू० १) रु० इसमें चारों वेदों के विषय का वर्णन है।

३ – मणित्थताजिकम् — मू० २) रु० (फलित ज्योतिष का मणित्थाचार्य का लिखा हुआ) यह दुर्लभ ग्रंथ हिन्दी अर्थ सहित पहली बार छपा है।

४ – रघुवंश (१म सर्ग) – मू० १) रु० । हिन्दी अर्थ सहित कालिदास कृत रघुवंश की कथा है।

५ – किरातार्जुनीय (१ सर्ग) – मू० ८० नए पैसे, अर्जुन के तप का वर्णन है। भारवि कवि कृत काव्य है।

६ – हर्षचरित सार, (२ उच्छ्वास) – मू० ३) रु० चक्रवर्ती महाराज हर्ष की कथा है।

७ – योगरत्नमाला – ३) रु० । यह सिद्ध नागार्जुन कृत आश्चर्यकारी जादू की अलभ्य संस्कृत की पुस्तक है जो संस्कृत टीका तथा हिन्दी अनुवाद सहित छपी है।

२ — विद्यालंकार-आर्यभाषा ग्रन्थमाला (हिन्दी)

इस ग्रन्थमाला में केवल हिन्दी के ही ग्रन्थ छपते हैं। नीचे लिखे ग्रन्थ छप चुके हैं –

१ – जयपराजय – दाम – ५) रुपये। यह लेडी जेन आस्टन के प्रसिद्ध उपन्यास 'प्राइड एंड प्रेजुडिस' का हिन्दी अनुवाद है। सर्वत्र यूनिवर्सिटियों में बी.ए. का कोर्स है।

२ — कोकसार भाषा – दाम – २) २५ न.पै.। यह कामशास्त्र पर कविता में आनन्द कवि ने ५०० वर्ष पूर्व लिखा था। हिन्दी अर्थ सहित छपा है। अभी तक अप्रकाशित तथा अलभ्य था।

३ – पाल और विर्जिनी – दाम – ३) रु० "Paul and Virginia" सुप्रसिद्ध फ्रेंच नावल का हिन्दी अनुवाद है जो प्रथम बार हिन्दी में छपा है।

४ – महादानी — दाम – ५) रु० । सुप्रसिद्ध अंग्रेजी नावल "Heart to Heart" का हिन्दी अनुवाद है जो पहली बार छपा है।

पुस्तक के मिलने का पता — श्रीमती ... आर्य ... , २०।६ राजेन्द्रनगर, पो. नई दिल्ली-५

नोट— 1. समर्पण, 2. भूमिका 3. मूल लेखक का जीवन तथा पुस्तक की आलोचना छपते समय लिखूंगा।। विद्याधर 25.8.64

ॐ

~~एकदान~~ महादानी

अंग्रेजी के चार्ल्स गार्विस कृत Heart to Heart का हिन्दी-अनुवाद

लेखक— कविराज विद्याधर विद्यालङ्कार

~~एकदान~~ महादानी

(प्रथम परिच्छेद)

(१)

मिस ग्रेशिया टैम्पेस्ट अपने महल ~~मसूसा~~ पवटन प्रायरी में गोलकमरे के मध्यमें खड़ी हुई अपने आसपास की वस्तुओं को आश्चर्य से देख रही थी। यह प्रथम ही अवसर था कि वह अपने मकानमें प्रविष्ट हुई थी। वहां वह अपने पिता की प्रतीक्षा कर रही थी। पांच वर्ष की आयु के बाद उसने अपने पिता को नहीं देखा था। और अब जिस समय का हम वर्णन कर रहे हैं वह बीस साल की नौजवान लड़की थी। गोल कमरा खूबसूरत और अमीराना ढंग से सजा हुआ था। परन्तु पीतल आदि धातुओं की बनी वस्तुएं न ध्यान देने और देर की होने के कारण काली पड़ गई थीं। कीमती और मोटे बेलबूटेदार कालीन घिस गये थे और कहीं २ से फट भी गये थे। रेशमी परदे बदरंग और फीके पड़ गये थे। मतलब यह कि कमरा देखने से लापरवाही और आलस्य की तस्वीर मालूम होता था। ग्रेशिया इस आस-पास के दृश्य से उदास हो रही थी। उसका लावण्य पूरे यौवन पर था और तिस पर भी चेहरे से चुलबुलापन टपकता था। गर्मी की ऋतु थी। दिन ढल चुका था। कमरे की खिड़कियों से धूप छनकर उसकी रेशमी पोशाक, कोमल कपोलों के सुन्दर रंग और सुनहरी बालों को विचित्र रीति से चमका रही थी। अभी थोड़े से ही मिनिट नहीं बीते थे जबकि वह प्रायरी के दरवाजे में गुजर कर के उजाड़ बाग के दोनों ओर [illegible] आई थी।

इस मकान में, जो कि पिछले जमाने में उसके बापदादाओं का था और जिसको अब वह अपना मकान जानती थी, वह प्रविष्ट हुई उसी समय से उसका दुःख मकान की ओर मालिकों की उपेक्षा और उदासीनता देखकर अधिक बढ़ गया था। कमरे में खड़ी हुई वह अपने पिता की प्रतीक्षा कर रही थी। सोचती थी कि ईश्वर जाने उनका स्वभाव कैसा है। साथ ही ग्रेशिया के ध्यान में पिछली घटनाएं, जबकि वह अन्तिम वार इस मकान से गयी थी, याद आ रही थीं। माता की मृत्यु के साथ ही पिता ने कुछ सप्ताह बाद ग्रेशिया को उसकी फूफी के साथ बाहर भेज दिया था और विचार था कि कुछ सप्ताह शोक करने के बाद उसको बुलवाये। परन्तु सप्ताहों से महीने और महीनों से वर्ष होगये। ग्रेशिया बच्ची से जवान होगयी परन्तु अपने पिता की इच्छानुसार वह फ्रांस ही में अपनी फूफी के साथ रही।

अभी कुछ दिन की बात है कि प्रातःकाल जबकि ग्रेशिया जागी तो अपनी फूफी को बिस्तरे पर मुर्दा देखा। जिससे ग्रेशिया को अपने मकान पबटन प्राल्थरी को आना पड़ा। वह बड़े चाव से वापिस आई थी, जिसकी वह बड़ी देर से प्रतीक्षा कर रही थी। परन्तु इस बड़े और उजड़े हुए कमरे में खड़ी हुई वह विचार किये बिना न रह सकी कि मैं फ्रांस वाले अपने छोटे से झोंपड़े में अपनी फूफी के साथ, जिसने मुझे पाला पोसा था, बहुत अच्छी थी। इस जगह मुझे कोई पूछने वाला ही दिखाई नहीं देता। ग्रेशिया इस विचार के साथ कांप रही थी कि दरवाजा खोल कर उसका पिता अन्दर आया। यह एक बूढ़ा आदमी था। दुबला पतला शरीर था, चेहरे का रंग साँवला था, कुछ झुर्रियें पड़ीं थीं और बाल बुढ़ापे के कारण सफेद हो गये थे। शरीर कुछ झुक गया था। कमरे में प्रविष्ट होते ही चारों ओर देखा और अपनी बेटी के चेहरे पर खिड़कियों की धूप पड़ती देखकर बूढ़े का मुरझाया हुआ चेहरा चमक उठा और आंखों से स्नेह और वात्सल्य का स्रोत उमड़ पड़ा। धीमे स्वर से बेटी को पुकारा— 'ग्रेशिया'।

ग्रेशिया अपने पिता की ओर बढ़ी और कुछ बात किये बिना ही दोनों हाथ पिता की गर्दन में डाले और सिर को उसकी बगल में रख बगलगीर हुई। ग्रेशिया के पिता मि. टेम्पेस्ट ने धीरे २ उसके सिर पर हाथ फेरा और ढाढस देता रहा। परन्तु साथ ही ग्रेशिया के दिल में सहज ही यह विचार [illegible] कि [illegible] मैं अपने बूढ़े पिता की सेवा करूं और

इनको साहस दूं। इस स्नेह और वात्सल्य के मधुर दृश्य के बाद दोनों पिता पुत्री एक पुराने स्थान पर बैठ गये और मिस्टर टैम्पेस्ट ने इस प्रकार बातचीत आरंभ की।—

मिस्टर टैम्पेस्ट — बेटी! क्या तुम बहुत थक गई हो। मुझको अपनी यात्रा का हाल सुनाओ। मैं समझता हूं कि तुम अवश्य थक गई होगी। यद्यपि मैंने बहुत देर से लंबी यात्रा नहीं की तथापि मुझे पूरी जानकारी है कि बड़ी यात्रा में क्या २ कठिनाइयां उपस्थित होती हैं। आश्चर्य है कि तुम्हारे चेहरे से थकान प्रतीत नहीं होती।

ग्रेशिया — पिताजी! ऐसा बहुत कम अवसर आया है जब मुझे थकान प्रतीत हो। मैं बहुत मजबूत हूं। यह कहकर ग्रेशिया खड़ी हो गई थी। साथ ही उस का पिता भी खड़ा हुआ और बेटी को संबोधन करके बोला —

मि० टैम्पेस्ट — प्यारी पुत्री! तुम्हारी ऊंचाई मेरे बराबर है परन्तु तुम्हारी आंखें तुम्हारी स्वर्गीया माता के ही अनुरूप हैं।

ग्रेशिया — प्रिय पिताजी! मैं आप से यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुई हूं।

मि० टैम्पेस्ट — तुम अंग्रेजी बहुत अच्छी बोलती हो और तुम्हारी चालढाल में कुछ भी अन्तर नहीं है।

ग्रेशिया — (आश्चर्य से मुस्करा कर) पिताजी! ठीक है। कारण यह है कि मैं फूफी के साथ सदा अंग्रेजी में बातचीत करती थी। वे सदा कहा करती थीं कि बेटी यदि तुम अंग्रेज के स्थान में फ्रांसीसी बनकर अपने पिता के पास जाओगी तो तुम्हारा पिता बहुत दुःखित होगा। क्या मैं अंग्रेज की लड़की होने का और विशेषकर के टैम्पेस्ट वंश की लड़की होने का अभिमान रखती हूं।

टैम्पेस्ट — (होंठ चबा कर मुस्कराते हुए) ग्रेशिया! अब हमारे पास केवल नाम के अतिरिक्त और कुछ नहीं रहा जिस का हमको अभिमान हो। परन्तु अभी मैं इस विषय में बात करना नहीं चाहता। तुम थकी हो और अच्छा होगा कि खाने से पूर्व थोड़ी देर अपने कमरे में आराम करलो।

यह कहकर मि० टैम्पेस्ट ने घण्टी बजाई। कुछ क्षण बाद एक झुकी हुई कमर वाला बूढ़ा नौकर आया और पुराने रिवाज के अनुसार झुककर प्रणाम किया।

टैम्पेस्ट — (नौकर से) जाओ, मिसिज सिटहर मेम साहिबा को भेज दो। (ग्रेशिया से) मिसिज सिटहर हमारे घर की प्रबंध करने वाली नौकरानी है। अब हमारे पास थोड़े से नौकर रह गये हैं और मेरा विचार है कि तुम भी बिना दासी के ही रहोगी। क्योंकि वर्तमान अवस्था मुझको मजबूर करती है।

ग्रेशिया — पिताजी! मैंने आज तक दासी नहीं रखी न ही मुझको आवश्यकता है। और मुझे आश्चर्य है कि नौकरानी रखने से लाभ ही क्या होता है।

मि० टैम्पेस्ट यह सुनकर आह भरे बिना न रह सके कि इसी बीच में अधेड़ उमर की एक सफेदपोश प्रसन्न मुखी स्त्री प्रविष्ट हुई जिसको मि० टैम्पेस्ट ने यों संबोधन किया।

टैम्प्रेस्ट — मिसिज़ सिप्हर! यह मेरी पुत्री ग्रेशिया है। मैं विश्वास करता हूं कि तुम इसको देखकर प्रसन्न हुई होंगी।

सिप्हर — (ग्रेशिया की ओर नम्रता से मुस्कराकर और पुराने शिष्टाचार को ध्यान में रखकर) हुजूर हुजूर! मैं बहुत खुश हुई हूं। (ग्रेशिया को संबोधन करके) मिस साहिबा! क्या आप मेरे साथ चलकर अपने कमरे का निरीक्षण करना पसंद करेंगी?

उसके बाद मिस ग्रेशिया और मेम सिप्हर कमरे से निकलकर सीढ़ियों पर चढ़ीं और शीशमहल कमरे के बराबर से गुजरती हुईं एक विशाल कमरे में प्रविष्ट हुईं। इस कमरे की खिड़कियां बहुत बड़ी थीं और इसके आगे एक बड़ी ड्योढ़ी थी। इस स्थान से वाटिका और वह रास्ता कि जिस रास्ते से ग्रेशिया सवार होकर आयी थी, पूरे तौर पर नज़र आता था। हम पीछे लिख चुके हैं कि कमरा बहुत विशाल था। सजावट का सामान यद्यपि बहुमूल्य था परन्तु बहुत पुराना था। इसे ग्रेशिया ने पहले ही देख लिया था। यों भी कह सकते हैं कि शाहाना गरीबी स्थान स्थान से टपकती थी। शृंगारमेज पर एक बड़ा गुलदान था जिसमें गुलाब तथा अन्य फूलों का गुलदस्ता सजा हुआ था। जिसको देखकर ग्रेशिया ने एकदम कहा —

ग्रेशिया — कैसे सुन्दर फूल हैं।

सिप्हर — मिस साहिबा! मैं आपकी बहुत कृतज्ञ हूं। इन फूलों को मैंने स्वयं तोड़ा था क्योंकि मुझको ख्याल आया था कि आप फूलों की शौकीन होंगी।

ग्रेशिया — (कोमलता से) यह आपकी बड़ी कृपा है। मुझको यहां की प्रत्येक वस्तु बहुत सुन्दर प्रतीत होती है।

मिसिज़ सिप्हर यह सुनकर बहुत खुश हुई मानो कि सारा महल उसका ही था और फिर कमरे के चारों ओर देखकर बोली —

सिप्हर — मिस साहिबा! मुझको भय था कि आप शायद नापसंद करेंगी क्योंकि कमरे की प्रत्येक वस्तु पुरानी और भद्दी है। यह कहकर मिसिज़ सिप्हर की इच्छा हुई कि वस्त्रादि ग्रेशिया के शरीर से उतारे, परन्तु ग्रेशिया ने उसको ऐसा करने से रोक दिया और कहा —

ग्रेशिया — तुम मेरे लिये कष्ट मत उठाओ, क्योंकि मैं अपना काम आप करना सीखी हुई हूं। घर में सारे काम ऐसे हैं जिन में तुमको बहुत कुछ करना पड़ता है।

मिसिज़ सिप्हर ने कुछ मिनिट हठ किया और चाहा कि वह नौकरानी का काम पूरा करे। फिर [illegible] और बाहर चली गई और थोड़ी देर में मुंह हाथ

धोने के लिये गरम पानी और चाय का सामान लेकर उपस्थित हुई।

सिटहर— मैं आपके आने पर बहुत खुश हुई हूं। प्राल्टरी एक लेडी के बिना उजड़ा हुआ मकान मालूम होता था परन्तु अब— परन्तु अभी पूरा वाक्य समाप्त न करने पायी थी कि ग्रेशिया समझ गई और सायंकाल की पोशाक जिसकी लेस काली थी पहनने लगी। पोशाक यद्यपि शोकसूचित करने के ढंग की थी परन्तु ग्रेशिया की सुन्दरता में चार चांद लगाती थी। गुलदान में से एक लाल गुलाब का फूल पोशाक पर टांकने से, बिना भूषणों के भी उसके सौन्दर्य में चकाचौंध पैदा करती थी। कपड़े पहन कर ग्रेशिया ने दर्पण में अपने प्रतिबिम्ब को देखा और सोचने लगी, देखें पिता जी मेरे इन वस्त्रों से खुश होते हैं या नाखुश। मेरा विचार है कि इस पुराने फैशन के मकान में पुराने आभूषणों से मुझको सज्जित होना चाहिये। बेचारी भोलीभाली ग्रेशिया को यह पता न था कि सौ आभूषणों की एक आभूषण उसकी अपनी सुन्दरता थी। कवि ने खूब कहा है— "नहीं मोहताज जेवर का जिसे खूबी खुदा ने दी।
कि देखो खुशनुमा लगता है कैसा चांद बिन गहने॥

महाकवि कालिदास ने भी कहा है— "सरसिजमनुविद्धं शैवलेनापि रम्यं,
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।
इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी,
किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्॥ शकुन्तलानाटक॥

अर्थात् सुन्दरी युवतियां कुछ भी पहन लें वे सुन्दर ही लगती हैं। अस्तु।

जिस समय ग्रेशिया गोल कमरे में प्रविष्ट हुई तो उसने अपने पिता को अपनी प्रतीक्षा करते हुए पाया।

टैम्पेस्ट— मेरी प्यारी बेटी? चिरकाल से प्राल्टरी में तुम जैसी कोई सुन्दर लेडी नहीं आई।

अभी ग्रेशिया उत्तर देने भी न पायी थी कि बूढ़े नौकर ने खाने के तय्यार होने की सूचना दी। बस दोनों पिता पुत्री खाने के कमरे में प्रविष्ट हुए। इस कमरे में मोमबत्तियों की धुंधली २ रोशनी थी और इतनी भी न थी कि ग्रेशिया की छाया भी सम्मुख की दीवारों पर पड़ सके। सफेद मेजपोश पर चीनी के प्लेट चमक रहे थे और पुराने शीशे के कण्टरों में से रोशनी की चमक नजर आती थी। खाना बिल्कुल सादा था। बूढा नौकर खाना मेज़ पर चुन २ देता था। पिता पुत्री दोनों बातें करते जाते थे। ग्रेशिया अपनी फ्रांस की जिन्दगी के हालात बतलाती जाती थी कि उसकी फूफी उसपर कितनी कृपालु थी। दोनों किस तरह से भ्रमण करने जाया करती थीं। कभी २ सवारी में भी जाती थीं। इत्यादि छोटी २ घटनाओं को बढ़ा २ कर वर्णन करती थी (घटनाएं यद्यपि बिल्कुल वर्णन के योग्य नहीं थीं परन्तु एक भोली लड़की के लिये वे ही पर्याप्त थीं। ग्रेशिया ऐसी गंभीरता और तन्मय होकर वार्तालाप करती थी मानों कि वह किसी गिरजे में बैठी हुई है। बीच २ में कभी २ हंस भी देती थी। फिर चौकन्ना होकर चारों ओर देखने लगती थी कि कहीं उसकी आवाज़ को व्यर्थ ही किसी ने सुना तो नहीं। मि० टैम्पेस्ट कभी तो कान लगाकर सुनता था और कभी किसी विचार में स्वयं इतना मग्न हो जाता था कि बेचारी का एक शब्द भी उसके ध्यान में न आता था। कभी

ग्रेशिया की उपस्थिति और उसके अस्तित्व पर एकबारगी चौंक पड़ता था। मानों कि वह अपने मकान में किसी दूसरी आवाज़ सुनने का अभ्यस्त न था। वार्तालाप के बीच में मि॰ टैम्पेस्ट ने कहा —

टैम्पे॰ — मेरा विचार है कि तुम इस जगह सुस्त रहोगी। मैं अपने सभी पुराने मित्रों से इतनी उपेक्षा कर चुका हूं कि उनमें से कोई मुझ से मिलने भी नहीं आता। परन्तु अब आशा है कि तुम जैसी सुन्दर प्रसन्नमुख लड़की के आने से वे लोग मुलाकात को आवेंगे।

ग्रेशिया — क्या हमारे पड़ौस में कोई मकान नहीं है ? मेरा अभिप्राय यह है कि कोई बड़ा मकान है या नहीं ?

टैम्पे॰ — अधिक नहीं केवल एक दो हैं। सब से निकट महल ग्रीनिच है। यह महल सर्वथा नया है। तुमको अपनी डेवढी में खड़े होकर उसका थोड़ा सा हिस्सा नज़र आ सकता है। यह महल भी प्राल्परी की भूमि में बना है। (गिरी हुई मध्यम स्वर से) मैंने ही उस को बेचा था। (प्रसंग को छोड़ते हुए) बेटी ? क्या अब तुम गोल कमरे में नहीं जाओगी ? मैं भी तुम्हारे पीछे २ आता हूं।

यह कहकर मि॰ टैम्पेस्ट ने गोल कमरे का दरवाज़ा खोल दिया और मिस ग्रेशिया को उस ओर रवाना करके आप धीरे से फिर कुरसी पर बैठ गया। वह बूढा नौकर धीरे से खाने के कमरे में प्रविष्ट हुआ और अपने स्वामी के गिलास में थोड़ी सी शराब और सोडा डालकर चला गया। और मि॰ टैम्पेस्ट शनैः २ मद्यपान में निमग्न हो गये।

गोल कमरे में जिस समय ग्रेशिया प्रविष्ट हुई तो क्या देखती है कि कुछ मोमबत्तियों के शमादान अंगीठी के ~~पास और~~ इधर उधर मेज़ पर रोशन हैं। कमरे में रोशनी मध्यम है। कोई किताब पढ़ने के योग्य न थी और न कोई ऐसा मनोविनोद का साधन था जिस को स्त्रियें पसंद करतीं। परन्तु कमरे में दूसरी ओर कोने में एक पुराना पियानो बाजा पड़ा देखकर ग्रेशिया को कुछ ढाढस हुआ और पास जाकर देखा तो एक पुराना बाजा था। बजाने से पता लगा कि देर से किसी ने उस के स्वर भी नहीं मिलाये हैं। परन्तु फिर भी ग्रेशिया ने उसे बजाना प्रारंभ किया। वह गाने की शौकीन थी और इस कला में अति प्रवीण थी। पहला विचार जो उसको हुआ वह यह था कि यह कमरा गाने बजाने के लिये कैसा उपयुक्त ~~था~~ है। बस इस विचार के आते ही उसने धीरे २ एक फ्रेंच भाषा का पुराना गीत आरंभ किया। और ऐसा उत्तम गाया कि दीवार की तस्वीरें और कमरे के सजावट के सामान भी चित्रलिखित से हो गये। सच है —

"खुदा ने दिया राग को वह असर। कि हो जाये पत्थर का पानी जिगर"॥

अभी ग्रेशिया गा ही रही थी कि मि॰ टैम्पेस्ट कमरे में धीरे से प्रविष्ट हुआ और गाने को ध्यान से सुनता रहा। जब गान समाप्त हुआ तो अति स्नेहभरे स्वर में बोला —

टैम्पे॰ — शाबास बेटी, तुम्हारी आवाज़ अत्यन्त सुरीली है और तुम बिलकुल अपनी स्वर्गीया माता की तरह गाती हो। कुछ और गाओ। बहुत देर से मैंने कोई गाना नहीं सुना।

पिता की आज्ञापालन के विचार से ग्रेशिया ने कुछ देर और गाया जिसको मि० टैम्पैस्ट ध्यान से सुनता रहा और सराहता रहा। राग की समाप्ति पर कहने लगा —

टैम्पे० — ग्रेशिया प्यारी पुत्री! बाजा बेसुरा है। उसके स्वर मैं ठीक करादूंगा। फिर तुम भी गाकर खुश होगी और मैं भी खुश हूंगा। खुशी शब्द कहने से पुत्री! मुझे याद आजाता है कि तुम्हारे खुश करने का सामान यहां बहुत ही कम है और तुम्हारा समय सुस्ती में गुजरा करेगा। तुम्हारे दिन घोड़ा गाड़ी में सवार होने के हैं परन्तु दुःख है कि अस्तबल में वही दो घोड़े हैं जिनपर सवारी कर तुम स्टेशन से आयीं थीं। दोनों बहुत बूढ़े हैं और तुम जैसी नौजवान लेडी की सवारी के योग्य नहीं हैं। न मेरे पास कोई फिटन, लैण्डो या बढ़िया गाड़ी है। केवल वही पुरानी गाड़ी है जिस पर तुम चढ़ चुकी हो। अस्तु० मैं यत्न करूंगा कि तुम्हारे लिये कुछ खरीद ~~सकूं~~ करूं।

ग्रेशिया — कदापि नहीं। पिता जी! मुझको कोई आवश्यकता नहीं है और नांही मुझ को सवारी आती है या बग्घी चलाना आता है।

टैम्पैस्ट — जैसी ईश्वरेच्छा। फिर तुम क्या करोगी। तुमको अपनी ही आयु के साथियों की आवश्यकता है। अच्छा मैं ऐसे व्यक्तियों की खोज करूंगा जो कि मेरे आतिथ्य को स्वीकार करें और हमारे यहां आकर ठहरें। किन्तु चिरकाल से कोई अतिथि हमारे यहां नहीं आया और प्रालब्री की अतिथिशाला बिल्कुल सूनी पड़ी हुई है। और नांही मकान ऐसे लोगों के रहने योग्य रह गया है।

ग्रेशिया — पिताजी! कोई आवश्यकता किसी अतिथि को बुलाने की नहीं है। मैं आपके साथ अकेली रहकर प्रसन्न हूंगी। इस बात पर मुझको अपनी फूफी याद आजाती है। हमारे मित्र केवल चुने २ थे और प्राय: हम अकेले ही रहते थे। रातें गुजर जाती थीं और हम किसी पुरुष की सूरत भी नहीं देखते थे। हमारे मित्र स्कूल के मास्टर थे और गाना बजाना था। मैं इस बड़े मकान आदि की निगरानी करके बड़ी प्रसन्न रहूंगी। क्यों पिता जी? यदि मैं देखभाल न करूंगी तो और कौन करेगा।

टैम्पैस्ट — पुत्री! तुम इस स्थान की स्वामिनी हो। यह एक पुराना और गरीब प्रदेश है जिसपर तुमने शासन करना है।

ग्रेशिया — मुझको इस बात का बहुत अभिमान है। कल मैं सारी भूमि आदि देखूंगी और प्रयत्न करूंगी कि मेरे निरीक्षण से कुछ लाभ प्राप्त हो।

टैम्पैस्ट — तुमने कल प्रात:काल उठना है। उत्तम होगा कि तुम शीघ्र सो जाओ। हां, यह भी ध्यान रखना कि मैं प्रात: काल की हाजरी पर तुम्हारे साथ खाना न खा सकूंगा। तुम इस बात का दु:ख मत करना। मेरी देर तक सोने की आदत है।

ग्रेशिया — नहीं, कदापि नहीं। (पिता की गर्दन में हाथ डालकर) मुझको हाजरी पर आपके न होने का दु:ख अवश्य होगा।

इसी वार्तालाप में ग्रेशिया और टैम्पैस्ट थोड़ी देर तक मग्न रहे। इसके बाद मि० टैम्पैस्ट ने आग्रह करके ग्रेशिया को उसके सोने के खास कमरे में भेज दिया।

और आप सिर झुकाये हाथ पीछे की ओर रखे हुए अपनी पुत्री को प्यार करके पुस्तकालय में चला गया और एक कुरसी पर जिसके सामने मेज़ पर बहुत से कागज़ात रखे हुए थे, बैठ गया। थोड़ी देर तक मौन बैठने के बाद उसने कुछ कागज़ उलट पुलट किये* और फिर कुछ मिनिट बाद उनको परे सरका दिया। वह धीरे २ स्वयं कहने लगा — हाय, ग्रेशिया तुझको क्या मालूम है कि मेरी आर्थिक दशा क्या है। तू एक कंगाल और दरिद्र लड़की है॥

॥ २ ~~परिच्छेद~~ ॥

ग्रेशिया सारी रात मीठी नींद का आनंद लेती रही और जब तक कि मिसिज़ सिटहर ने दरवाज़ा न खटखटाया नहीं जागी। मिसिज़ सिटहर एक प्याला चाय और गरम पानी लेकर उपस्थित हुई और कहने लगी —

सिटहर — मिस साहिबा! अब साढ़े आठ बज गये हैं। मेरा खयाल है कि अभी आप थोड़ी देर और लेटेंगी।

ग्रेशिया — (चिल्लाकर) ओहो! साढ़े आठ बज गये! शोक, बहुत देर हो गई। हम फ्रांस में सर्वदा सात बजे उठा करते थे। क्या पिता जी अभी तक सो रहे हैं?

सिटहर — जी हां, अभी तक आराम में हैं। उनको रात को बहुत कम नींद आती है। मैंने प्रायः रातों को उनके टहलने का शब्द सुना है।

ग्रेशिया आध घण्टे में बिल्कुल तैयार हो गई और धीरे २ गाते हुए नीचे कमरे में चली गई। यहां पर जेप जिसको बावरची समझो या बहरा खयाल करो या नौकर कहलो, प्रतीक्षा में खड़ा हुआ था। उसने विनय सहित प्रार्थना की कि मिस साहिबा, खाने के कमरे में तशरीफ ले चलें। खाने के कमरे की बड़ी खिड़कियां सब खुली हुई थीं और सूर्य की किरणें सजावट के सामान की चमक को और अधिक चमका रही थीं। कमरा रात की अपेक्षा बहुत अधिक सुन्दर मालूम होता था। ग्रेशिया हाजरी पर बैठ गई और थोड़ी देर में निबट कर उठ खड़ी हुई। वह डेवढ़ी की खिड़की में होकर नौकर से कहने लगी कि जब पिताजी जागकर खाना खाने आवें तो मुझको सूचित कर दिया जावे। मैं स्वयं उनको खाना दूंगी।

डेवढ़ी के बाहर की ओर देखने से दृश्य बहुत ही सुन्दर प्रतीत होता था। पाइन बाग बिल्कुल सुन्दर तरीके पर लगाये गये थे। स्थान २ पर हरी २ झाड़ियों को छांटा गया था मानों हरी मखमल का बिछौना बिछा था। किसी जगह अति सुन्दर फूलों की क्यारियां विचित्र दृश्य उत्पन्न कर रही थीं। पाईन बाग में स्थान २ पर विविध प्रकार के पत्थरों की मूर्तियां गड़ी थीं परन्तु पुरानी होने के कारण किसी का हाथ टूटा हुआ है तो किसी का पैर उड़ा हुआ है। कालचक्र के प्रभाव के कारण रंग उड़कर बदसूरत धब्बे रह गये हैं। पुष्प जितने क्यारियों में थे वे सस्ते दामके गुल दाऊदी या गुल सोसन थे। वाटिका में कहीं २ हरी घास के क्षेत्र थे जिनके चारों ओर सस्ती प्रकार की [illegible] हुई [illegible] गाय अपना पेट पाल रही थीं। इससे

आगे चलकर कहीं २ कांटेदार झाड़ियां थीं जो समय पाकर खराब होगई थीं परन्तु किसी समय अवश्य प्राकृतिक सौन्दर्य को द्विगुणित करती होंगी। इस लापरवाही के दृश्य से ग्रेशिया इतनी ही प्रभावित हुई जितनी कि मकान की अवस्था से हुई थी। परन्तु कोई ऐसा आकर्षण ग्रेशिया को इन उजड़े हुए पौधों तथा फूलों से प्रेम करने के लिये बाधित कर रहा था, मानो उसके समीप वे ही थे। ग्रेशिया अभी इन्हीं विचारों में लीन थी कि मिसिज़ सिटहर खिड़की के पास पहुंची।

ग्रेशिया — मिसिज़ सिटहर ? मैं चाहती हूं कि तुम मेरे साथ चलकर मुझको सारी जगह दिखा दो। परन्तु इस से पूर्व कि हम चलें, मैं चाहती हूं कि पिताजी को मैं हाज़री या प्रातराश खिला दूं।

सिटहर — वे तो साढे ग्यारह बजे से पहले बिस्तर से नहीं उठते।

ग्रेशिया — अच्छा तो मैं अकेली ही एक घण्टे तक बाग की सैर करूंगी।

मिसिज़ सिटहर ने एक दूसरी नौकरानी से जो कि कमरे में झाड़ू दे रही थी कहकर ग्रेशिया की टोपी मंगवाई। जिसको पहन कर ग्रेशिया लंबे कदम रखती हुई वाटिका में गई। थोडी देर पगडंडियों में चलने के बाद खुले मैदान में पहुंची और फिर चरागाह से होती हुई खेतों में होली। स्काटलैंड के बड़े २ सनोवर के वृक्षों में से गुजरते हुए इन वृक्षों के पत्तों से छनती हुई धूप और चलती हुई पवन की सुगंधि ने ग्रेशिया को मंत्र मुग्ध कर लिया। वह जंगल जिसमें से कि वह गुजर रही थी आगे चलकर इसी एक ओर को मुड़ गया था। थोड़ी दूर आगे चलकर इसी मोड़ में देवदार के बड़े २ गुंजान वृक्ष थे। प्रायः पेड़ गिर पड़े थे जिन पर से उन को पार करना पड़ा। अभी वह इन गिरे हुए वृक्षों को पार कर रही थी कि एक वृद्ध पुरुष हाथ में एक दराती लिये हुए आगे आया और टोपी उतार कर मिस ग्रेशिया को ~~सलाम~~ नमस्कार किया। जिसका उत्तर ग्रेशिया ने नमस्कार में दिया और परिचय प्राप्त करने की इच्छा से कहा—

ग्रेशिया — क्या तुम इस स्थान के माली हो ?

बूढ़ा — जी हां, मिस साहिबा, मैं ही माली हूं। क्षमा करें क्या आप इस महल की स्वामिनी हैं ?

ग्रेशिया — हां, क्या तुम बहुत देर से यहां काम करते हो ?

बूढ़ा — मिस साहिबा ! जब मैं बच्चा सा था उस समय से ही नौकर हूं। (मुस्करा कर) मिस साहिबा ? क्या आप वाटिका का निरीक्षण करेंगी ?

ग्रेशिया — मैं अभी २ वाटिका में से फिरती हुई आ रही हूं, मेरा विचार है कि कुछ और आगे फिर आऊं। यह बाग बहुत सुन्दर है। मैं फिर कर बहुत प्रसन्न हुई हूं।

बूढ़ा — (संदिग्ध दृष्टि से) मिस साहिबा ! यह है तो ~~बेशक~~, निस्सन्देह सुन्दर परन्तु हमारी मलकीयत नहीं है।

ग्रेशिया — क्यों, फिर किस की मलकीयत है ?

बूढ़ा — (गंभीरता तथा धीरता से) मिस साहिबा! यह किसी समय हमारी मलकीयत थी परन्तु अब लार्ड रैमूर साहब की है। बूढ़े

बूढ़े के इस कहने पर ग्रेशिया को अपने पिता की गत सायंकाल की बातचीत स्मरण हो आई, जब कि उसने यह कहा था कि डेवढ़ी से लार्ड रैमूर का मकान नजर आता है। तब मिस साहिबा ने बूढ़े से उत्सुक होकर कहा —

ग्रेशिया — वह मकान कहां है? क्या दूर है?

बूढ़ा — बिलकुल समीप है। यदि आप देखना चाहें तो मैं बतला सकता हूं।

यह कहकर बूढ़े के साथ २ (चलकर दोनों एक खुले मैदान में पहुंचे, जहां से) ग्रेशिया ने आगे पग बढ़ाया; और लोहे के टूटे हुए जंगले के साथ २ चलकर दोनों एक खुले मैदान में पहुंचे, जहां से ग्रेशिया ने कुछ दूरी पर एक विशाल महल जो कि संगमरमर का बना था, देखा। अपने मकान प्रायरी की तुलना में ग्रेशिया को इस महल की उपमा देते हुए एक स्पष्ट भिन्नता दिखाई दी। क्योंकि यह मकान समृद्धि की साक्षात तस्वीर दीख रहा था और अपना मकान दरिद्रता का नमूना था। इस मैदान में खड़े होकर ग्रेशिया ने वाटिका को देखा जिसमें विविध प्रकार के सुन्दर फूल अधिकता से लगे थे। सड़कों और हरे घास के खुले मैदानों पर धूल का नामनिशान न था। अभिप्राय यह कि सारा स्थान धन और सभ्यता का चमत्कार दिखाई देता था।

ग्रेशिया — (आप ही आप कुछ ऊंची आवाज से) यह स्थान अति सुन्दर है।

बूढ़ा — बेशक मिस साहिबा, परन्तु लार्ड रैमूर साहब भी तो एक धनी सेठ हैं। ऐसे स्थान को ठीक रखने के लिये धन भी आवश्यक है। मिस साहिबा! यहां लगभग आधे दर्जन माली हैं और मकान में नौकरों की एक फौज की फौज है। यह मकान वर्तमान लार्ड के पिता ने बनवाया था। मेरा ख्याल है कि लार्ड महोदय के कुछ और मकान भी हैं परन्तु वह स्वयं सदा यहीं रहते हैं।

ग्रेशिया — लार्ड साहब का यहां रहना कुछ आश्चर्य की बात नहीं है। मेरा विचार है कि दूसरे मकान इस मकान से अधिक सुन्दर न होंगे।

बूढ़ा — मिस साहिबा! धनवान होना बहुत ही अच्छा है। धन क्या नहीं कर सकता। परन्तु, वाह रे भाग्य! लार्ड रैमूर बेचारा किस शोक और दीनता की दशा में है।

ग्रेशिया — क्यों क्या बात है? लार्ड रैमूर शोकातुर और दुःखित क्यों रहते हैं?

बूढ़ा — (सिर हिलाकर) मिस साहिबा! वे सदा के रोगी हैं और कोई ऐसी बीमारी डाक्टरों ने बतलाई है जो असाध्य है। वह मकान में केवल अकेला रहता है। प्रत्युत नौकरों की संख्या कोई नहीं। और ऐसा जीवन व्यतीत करता है जैसा कि —

ग्रेशिया — (बात काटते हुए) जैसे कि जोगी या भिक्षुक।

बूढ़ा — निस्सन्देह! लार्ड महोदय कदाचित ही अपनी जागीर से बाहर जाते हैं।

जमीन भी क्या थोड़ी है? महल के पीछे बहुत दूर तक जमीन ही जमीन है। मिस साहिबा, आपको विदित है कि यह जमीन किसी समय ग्राल्बरी के साथ जुड़ी हुई थी और हमारी मलकीयत थी।

ग्रेशिया — हां विदित है।

बूढ़ा — थोड़ा समय गुजरा कि आपके पिता ने इस भूमि को बेच दिया। मैंने सुना है कि लार्ड रैमूर साहिब घर से बाहर कहीं नहीं जाते। और जायें भी क्यों? पुस्तकालय पुस्तकों से भरा हुआ है। शीशमहल तस्वीरों से सज रहा है। तैरने के लिये हौज बनवाये हैं। और भी अनेक प्रकार के अमीरी ठाठ हैं परन्तु बेचारे की दशा दयनीय है। मिस साहिबा! दौलत से सदा खुशी नसीब कहीं होती है? प्रायः करके दौलत जीवन का भार हो जाती है। (कुछ सांस लेकर) मिस साहिबा! रात मुझको सूचना दी गई कि आप प्रातःकाल वाटिका का निरीक्षण करेंगी और इसी कारण से मैं आपके नमस्कार को हाजिर हुआ। मैं जानता हूं कि नौजवान कुलीन कन्यायें फूलों की शौकीन होती हैं। मैं प्रतिदिन प्रातःकाल ही आपके लिये सुन्दर फूल भेजा करूंगा। यद्यपि वे आपके योग्य तो न होंगे तो भी मैं प्रयत्न करूंगा कि बढ़िया गुलदस्ता बनाकर भेजूं। परन्तु मैं क्या करूं कि अकेला माली हूं और कोई नौकर मेरी सहायता करने वाला नहीं है। दास का नाम होग है। यदि प्रातःकाल के अतिरिक्त किसी अन्य समय में फूलों या गुलदस्तों की आवश्यकता हो तो आज्ञा भेज दिया करें। मैं आज्ञापालन में देर न करूंगा। यह कहकर बूढ़े ने नमस्कार किया और चला गया। ऐसा प्रतीत होता था मानों उसने बहुमूल्य समय व्यर्थ खर्च कर दिया है।

होग के जाने के बाद ग्रेशिया कुछ मिनिट तक मकान को ध्यान से देखती रही। और वृद्ध की वार्तालाप से जो उसने लार्ड महोदय के विषय में की थी बहुत दुःखित हुई। अपने विचार में लार्ड रैमूर को एक बूढ़ा पुरुष मानकर उसकी काल्पनिक तस्वीर इस प्रकार से बनाई कि वह अपने जीवन के शेष दिन किसी सांघातिक भयंकर रोग में व्यतीत कर रहा है। उसने कल्पना में देखा कि लार्ड अपने संगमरमर के महलों में टहल रहा है और अपनी लकड़ी के सहारे से धीरे २ लंगड़ाता हुआ कभी शीशमहल में प्रविष्ट होता है कभी कहीं। ये विचार ग्रेशिया को शुभ प्रतीत न हुए। वापिस होते समय उसने उनको अपने दिमाग से निकाल देना चाहा। इस मैदान से वह वापिस जाना चाहती थी। परन्तु भूलकर ग्राल्बरी की भूमि के स्थान में वह ग्रीनिच की भूमि में चली गई। तत्काल ही उसे विदित हुआ कि मैं एक सनोवर और देवदार के घने जंगल में चली गई हूं। यह स्थान उसको अति रमणीय प्रतीत हुआ। क्योंकि झुकी हुई शाखाएं और गिरे हुए पेड़ सब पत्तों से हरे भरे थे। एक गिरे हुए पेड़ के तने पर वह दम लेने को बैठ गई, जिसके चारों ओर उस गिरे हुए पेड़ की शाखाएं दिखाई देती थीं। इस स्थान का एकान्त में होना तथा यहां की पवित्रता उसको ऐसी भाई कि वह अपने आपको एक पवित्र स्थान में बैठा हुआ निश्चय करने लगी। अभी वह तीन मिनिट से अधिक न

बैठी होगी कि एक विशेष शब्द उसके कानों में पड़ा। जैसे कोई प्राणी सूखे पत्तों पर चल रहा हो। उसके सामने एक बहुत बड़ा सनोवर का पेड़ था। उस पर से झुक कर देखा कि एक नौजवान पुरुष धीरे २ उसकी ओर आ रहा है। आनेवाला व्यक्ति फुर्तीला और लंबा चौड़ा जवान था और आसमानी रंग का सूट ओवरकोट पहने था। ज्यों २ वह समीप आता था ग्रेशिया को सुन्दर पर पीतवर्ण दिखाई पड़ता था। इस व्यक्ति का चेहरा कुछ ऐसा भला मालूम होता था कि ग्रेशिया के हृदय का आकर्षण उस की ओर को क्षण २ बढ़ता जाता था। रंग रूप ऐसा साफ़ था और उसके शरीर के अंग भी दूर से साफ़ ~~खिल~~ सुडौल दीख रहे थे। सिर पर एक नरम फैल्ट टोपी थी और हाथ में एक अत्यन्त चमकीला पिस्तौल लिये हुए था। इस पेड़ से बीस क़दम के फ़ासिले पर आकर वह ठहरा और पेड़ की ओर निशाना ताक कर पिस्तौल चलाया। यद्यपि ग्रेशिया स्वभाव से ही बलवान हृदय की थी परन्तु इस दृश्य से वह घबरा गई और खड़े होकर अकस्मात ही उसकी चीख निकल गई। चीख की आवाज़ सुनते ही युवक ने अपना पिस्तौल नीचा कर लिया और सामने की ओर ध्यान से देखने लगा। उसने आगे बढ़कर ग्रेशिया को इसी सनोवर के पेड़ की आड़ में देखा। वह सीधी खड़ी हुई थी। उसने दोनों हाथ बगलों में दिये हुए थे और आंखें फाड़ २ कर देख रही थी। युवक उसी आश्चर्यजनक रीति पर पिस्तौल हाथ में लिये हुए जिसमें से अभी तक धुंआं निकल रहा था, आगे बढ़ा। जब ग्रेशिया से कुछ ही क़दम की दूरी पर रह गया तो टोपी उतार कर नमस्कार किया और कहा कि मैं आपसे क्षमा मांगता हूं। परन्तु ग्रेशिया की दशा अकथनीय थी। उसकी सामर्थ्य टूटना ही चाहती थी। आंखें बंद थीं और इस प्रकार झूम रही थी कि अब गिरी कि गिरी। युवक ने यह विचार करके कि कहीं यह सुन्दरी गिर न जाये ग्रेशिया का हाथ पकड़ लिया और दूसरे हाथ से उसकी कमर को दृढ़ता से थाम कर कहा — "युवती! बेहोश न हो, होश करो। आपको चोट नहीं आई है। आप सर्वथा बच गई हैं। मुझको पता न था कि इस जगह आप या कोई अन्य प्राणी उपस्थित है। कृपा करके बेहोश न हों।।"

३
~~दूसरा परिच्छेद~~

ग्रेशिया कुछ क्षण मूर्च्छित दशा में रही और होश में आते ही युवक से हटकर खड़ी हो गई। और दोनों चुपचाप एक दूसरे को देखने लगे।

युवक — मुझे शोक है कि मेरी चेष्टा से आप डर गईं। मुझको बिल्कुल ध्यान न था कि इस जगह कोई होगा अन्यथा मैं पिस्तौल न चलाता। क्या अब तक भी आप भयभीत हैं? क्या मैं आपको आराम दे सकता हूं!

ग्रेशिया — नहीं, अब मैं सर्वथा भयभीत नहीं हूं। हां, परन्तु पहले अवश्य घबरा गई थी क्योंकि आप मेरी ओर ही निशाना बांध रहे थे। भगवान जाने तुम क्यों ऐसा करते थे।

युवक — सर्वथा नहीं। मैं आपको निशाना नहीं बनाता था, यद्यपि आपने यही समझा
मेरा विचार है कि आपने मुझे पागल समझा होगा।

ग्रेशिया — निस्सन्देह, मुझको विचार तो यही आया था। परन्तु आप किस चीज़ को निशाना लगा रहे थे।

युवक — पेड़ पर एक निशान है उसको निशाना लगाता था। आइये, मैं आपको दिखाऊं।

यह कहकर नवयुवक ग्रेशिया को अपने साथ लेकर वृक्ष की ओर बढ़ा और एक कागज़ को दिखलाया जो कि वृक्ष के साथ एक कील द्वारा लटकाया हुआ था। कागज़ के ठीक बीच में पिस्तौल की गोली का निशान था।

युवक — मुझको पिस्तौल से निशाना बांधने और पिस्तौल चलाने का बड़ा शौक है। और मैं लगभग प्रतिदिन इसी समय यहां आता हूं और निशाना लगाने का अभ्यास करता हूं। मैं सर्वदा ही इस खेल को मूर्खता समझता रहा हूं परन्तु आज मालूम हुआ कि भयंकर भी है। इस कारण से नहीं कि आपको निशाना बना लिया होता।

ग्रेशिया — यह मेरी मूर्खता थी कि मैं डर गई। मेरा विचार है कि मुझको क्षमा मांगनी चाहिये, क्योंकि मैं लार्ड रैमूर की मलकीयत और ग्रीनिच की भूमि में बिना पूछे आई हूं। क्या यह असत्य है?

युवक — कृपा करके बिना पूछे की बात को छोड़िये। क्या आप इस जगह से गुल सोसन के फूल तोड़ रही थी?

ग्रेशिया — कदापि नहीं। मैंने कोई फूल नहीं तोड़ा। परन्तु ये फूल मुझको बहुत पसंद हैं। (स्वगत या मन में) आज की मेज़ पर इन फूलों का गुलदस्ता कैसा अच्छा सजेगा! [भोजन]

युवक — लीजिये, मैं आपके लिये तोड़ लाता हूं। आप थोड़ी देर विराजिये, मैं इतनी देर में बहुत से इकट्ठे कर लूंगा। मैं गुल सोसन का स्वयं भी प्रेमी हूं। माली ऐसे फूल कदापि नहीं तोड़ सकता जैसे कि चरागाहों में नज़र आते हैं।

ग्रेशिया यह सुनकर उसी गिरे हुए पेड़ पर बैठ गई और ध्यानपूर्वक उस युवक की इस चेष्टा को देखती रही। और वह सुन्दर २ फूल छांट २ कर इकट्ठे करने लगा। यह कहना अत्युक्ति न होगी कि वह युवक अत्यन्त सुन्दर रूपवान था। परन्तु ग्रेशिया के दिल को जिस वस्तु ने मोम किया वह उसका रूप न था प्रत्युत कोई विशेष बात उसके चेहरे से प्रकाशित होती थी जिस के विषय में ग्रेशिया स्वयं भी कुछ वर्णन न कर सकती थी। उसके काले नेत्रों में कुछ ऐसी खिन्नता, ऐसा सन्तोष तथा ऐसी उपेक्षा या उपरामता थी जिसने कि ग्रेशिया को उसकी ओर खींच लिया था। और यही अवस्था उसकी वाणी की भी थी। ग्रेशिया सोचती रही कि यह कौन पुरुष है। शायद लार्ड रैमूर का कोई मित्र होगा या सगा संबन्धी ही होगा।

न केवल व्यापार में प्रत्युत यदि वह राख में भी हाथ डालता तो वह सोना बन जाती थी। ऐसे मनुष्य भी होते हैं। वह सर्वदा उन राजनैतिक कार्यों में कृतकार्य सिद्ध होता था जिनमें वह (सभा आदि में) बुलाया जाता था। (सर्वसाधारण की)

ग्रेशिया — मुझे मालूम है।

युवक — स्वर्गवासी पिताजी का समय और रुपया दोनों ऐसे उत्तम कामों में लगते थे। लोग उनको सोने की चिड़िया कहते थे और सर्वदा उनसे लाभ उठाते थे। लोगों की कोशिशों का परिणाम यह निकला कि वह लार्ड बन गये। उनका केवल एक ही पुत्र था जो कि वर्त्तमान लार्ड रैमूर है। परन्तु उस के आचार व्यवहार अपने पिता से भिन्न हैं। उसको रुपये का तो कोई ख्याल ही न था। उसकी प्रवृत्ति व्यायाम और कला तथा कौशल की ओर थी। या यों कहो कि अपना समय घुड़दौड़, मल्लाही, किश्तियों आदि में गुजारता था। इसकी जगह कि वह उच्च २ पदों या पदवियों को ढूंढता वह किश्ती में बैठा और एक मील की दौड़ जीत गया। मिस हैम्पेस्ट, मैं क्या वर्णन करूं, तुम इन बातों को क्या समझ सकती हो?

ग्रेशिया — नहीं, मैं सब समझती हूं। यद्यपि मैं फ्रांस में रही हूं परन्तु याद रखिये मैं इंगलैण्ड की रहने वाली हूं।

युवक — क्षमा कीजिये, मैं भूल गया था, अस्तु। रैल्फ रैमूर (वर्त्तमान लार्ड) शिकार, मछली का शिकार, कुत्तों से शिकार कराना, घुड़दौड़, टट्टी फलांगने आदि में पूरा प्रवीण था। उसको पुस्तकों, तस्वीरों और संगीत का भी शौक था। परमात्मा का धन्यवाद है कि अब तक भी अन्तिम शौक उसमें विद्यमान है (थोड़ी देर ठहर कर) एक दिन की बात है कि उसके पिता को स्वर्ग सिधारे हुए अभी एक साल हुआ था कि लार्ड रैमूर एक बड़ी घुड़दौड़ जीता। उसको प्रसन्न होना चाहिये था क्योंकि वह कठिन मुकाबले में सफल हुआ था। वह और उसके मित्र अनगिनत रुपये जीते थे। परन्तु उस दिन वह कुछ शोकातुर और दुःखित था। कारण यह था कि उसकी छाती में बांयीं ओर उग्र शूल हो रहा था। उसने पीड़ा को अधिक अनुभव न किया, और सोचा कि कुछ दिन में स्वयं ही शान्त हो जायगी। परन्तु पीड़ा क्षण २ में बढ़ती गई। यहां तक कि रात को दर्द के मारे नींद भी नहीं आई। दूसरे दिन प्रातःकाल खाना भी न खाया गया। विवश होकर उसको अपने गृहचिकित्सक के पास जाना पड़ा। यह चिकित्सक रैमूर को बचपन से जानता था। उसने उसको एक दूसरे प्रसिद्ध डाक्टर के पास भेज दिया। संभव है कि आप उसको न जानती हों। उस का नाम नोराफील्ड था।

ग्रेशिया — क्या लार्ड रैमूर ने ये सारी बातें आपको बतलाई हैं?

युवक — हां, आप सोच रही होंगी कि मुझको किसी दूसरे का रहस्य नहीं खोलना चाहिये। किन्तु मुझको इस रहस्य के खोलने का अधिकार दिया गया है। और यदि लार्ड रैमूर से आप स्वयं मिलें तो वह आपसे अथ से इति तक सारा हाल स्वयं कह देगा।

ग्रेशिया अपने मानसिक भावों का उद्गार दूसरे से सुनकर कुछ लज्जित सी हुई। फिर नवयुवक से बातचीत करनी शुरु की।

युवक — मैंने कहां तक कथन किया था? हां याद आगया। उस प्रसिद्ध डाक्टर ने रैमूर का निरीक्षण बहुत विचार और बुद्धिपूर्वक किया और रोग को असाध्य बतलाया।

ग्रेशिया — असाध्य! हैं! क्या एकदम असाध्य कहा।

युवक — जी हां, अर्थात् मृत्यु अनिवार्य है।

ग्रेशिया — (ठंडी सांस भर कर) शोक?

युवक — हां, डाक्टर ने कहा कि दिल बहुत फैल गया है। डाक्टर ने यह नहीं कहा कि वह पहले से ही फैला था या इस अन्तिम दौड़ में। यह एक ही बात थी और बीमारी का कारण पर्याप्त था। रैमूर के भाग्य में मृत्यु निश्चय ही अवश्यम्भावी थी और यह उनके अपने अधिकार में था कि वह यम के दूत को तत्काल आवाहन करे या कुछ दिन और जीवित रहे। क्योंकि डाक्टर ने निश्चित कर दिया था कि यदि रोगी कुछ दिन जीवित रहना चाहता है तो उसे चाहिये कि सारे खेल कूद, शारीरिक व्यायाम को सर्वथा छोड़ देवे। और एकान्त में जाकर रहे। और एक फकीरों का सा सादा जीवन व्यतीत करे। किसी प्रकार का जोश, शोक, प्रसन्नता, दिल में न लावे। और नाहीं मदिरा सेवन करे। न तमाखु पान करे। और सर्वथा आराम और सुविधा में रहे। अभिप्राय यह कि डाक्टर ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि रैमूर को ऐसा जीवन व्यतीत करते हुए भी मरने के लिये सब समय उद्यत रहना चाहिये। ग्रेशिया का चेहरा यह सुनकर पीला पड़ गया और ठंडी सांस लेकर उसने कहा —

ग्रेशिया — बेकस लार्ड शोक तेरी दशा पर।

युवक — (कुछ सोच कर) बेशक यह शोक करने वाली बात है परन्तु दुनियां में इससे भी अधिक शोक देने वाली घटनाएं हैं।

ग्रेशिया — होंगी, परन्तु मैं नहीं जानती। ख्याल तो करो कि जवानी हो, शक्ति हो, दिल में अरमान भरे हों और उस पर भी निराशा।

(१८)

मैं निस्सन्देह यही कहूंगी, रैमूर दया का पात्र है।

रैमूर — (सुन्दरी के चेहरे पर ध्यान देकर) हां, परन्तु हो भी क्या सकता है। यदि लार्ड रैमूर को जीवन की चाह है, चाहे वह कुछ दिन की हो तो उस को उचित है कि डाक्टर की नसीहत के विरुद्ध आचरण न करे। यही कारण है कि वह इस महल में, जो उसके पिता ने केवल इस उद्देश्य से बनवाया था कि जब वह काम करते २ थक जावे तो इस जगह एकान्त में आराम करे — आ गया है, और मृत्यु की प्रतीक्षा बड़े धैर्य और शान्ति से कर रहा है। वह एक संसार त्यागी वैरागी की सी जिन्दगी गुजर कर रहा है। अपनी भूमि से कभी ही बाहर जाता है। बहुत थोड़ा समय पढ़ने में व्यतीत करता है। खेलकूद बहुत ही कम कर दिया है। दिनरात नई २ तस्वीरें मंगवाता रहता है। नौकरानी के सिवाय किसी से मिलता जुलता ही नहीं। संक्षेप में कहें तो वह अपने जीवित रहता हुआ भी अपने को मृतक समझे हुए है।

ग्रेशिया — (आंखों में आंसू भरे हुए) यह मेरी आयु में एक बहुत ही दर्द भरी कहानी है। मैं ने ऐसी कोई कहानी नहीं सुनी। मैं अपने विचार में उसको इस समय देख रही हूं। वह अपने मकान के बड़े २ कमरों में टहल रहा है और सदा उस क्षण की प्रतीक्षा में है जबकि — हाय किस वाणी से उस कष्टदायक अवश्यंभावी वस्तु का नाम लूं। हां, यह तो फ़रमाइये कि वह बहुत शोकातुर रहता होगा।

युवक — नहीं, सर्वथा नहीं। जैसे कि किसी कवि ने कहा है कि 'रंज सहते २ तू पत्थर कलेजा हो गया," वह गम खाने का अभ्यस्त हो गया है। दुनियां में लाखों पुरुष ऐसे होंगे।

ग्रेशिया — यह उसके लिये और भी बुरा है।

युवक — (हंसकर) मैं प्रसन्न हूं कि मैंने आपको लार्ड रैमूर की कथा सुना दी।

ग्रेशिया — यह प्रसन्न होने का कौन अवसर है।

युवक — कारण यह है कि लोग उसके विषय में अनेक प्रकार की अफ़वाहें फैलाते हैं। अब मैं आप से प्रश्न करता हूं कि अकेले जीवन व्यतीत करने और अपने इष्टमित्रों से अलग रहने में उसने अच्छा किया या बुरा किया

ग्रेशिया — मेरा विचार है कि वह भूल पर है। दुःख भुलाने के उद्देश्य से इस समय आवश्यकता है कि इष्ट मित्र उसके पास रहें। मित्र भी सच्चे मित्र हों जो उसके अनुरूप उसे शान्ति और धैर्य देवें। साथ ही सहानुभूति भी दिखाने वाले हों। मेरा विचार है कि कोई न कोई मित्र ऐसा अवश्य होगा जो उसकी रक्षा तथा परिचर्या करे। मेरा अपना विचार यह है कि लार्ड रैमूर के लिये भी अच्छा होगा कि वह अपने मित्रों को बुलावे और अपने पास रखे। हां, ध्यान तो करो कि उसका अकेलापन का विचार करना ही कैसा भयावह है। वह एकान्त में अपना जीवन नष्ट कर रहा है। न जाने किस समय फ़रिश्ते ... (आगे वाणी रुक गई)।

युवक — (वाक्य को पूरा करते हुए) मौत अपना काम करे। मेरा ख्याल है कि लार्ड रैमूर ने इसके दूसरे फ़रिश्ता अर्थ लगाये हैं और सब इष्ट मित्रों से कनाराकशी की है। उदाहरणार्थ, आपके पिता मिस्टर टैम्पेस्ट सब से अधिक समीपवर्ती पड़ोसी हैं जिन से लार्ड रैमूर के पिता ने यह भूमि खरीदी थी। अब मैं आप से साधारण रूप से पूछना चाहता हूं कि लार्ड रैमूर जो आपके पिता से नहीं मिला यह उसने अच्छा किया या बुरा ?

ग्रेशिया — बुरा किया। मेरा अपना विश्वास है कि पिताजी लार्ड साहब से मिलकर बहुत खुश होते और जहां तक उनकी शक्ति में होता लार्ड साहब की ज़िन्दगी को अन्धकार में घिरने से बचाते।

युवक — क्षमा करना, यदि आपसे लार्ड रैमूर का परिचय होता तो आप क्या करतीं ?

ग्रेशिया — जी हां, जो कुछ मुझसे हो सकता मैं करती। मैं उनके नष्टप्राय जीवन को मनोरंजक बनाने का प्रयत्न करती। मैं बड़ी प्रसन्नता के भावों में उनसे बातें किया करती। उनको अपने खेलकूद, गाने बजाने से सुरक्षित करती और प्रयत्न करती कि वे अपने दुःख को भूल जावें। (एकाएक चौकन्ना होकर उठी) ओहो ! मैं इस जगह चिर काल से बैठी हूं और मुझ को देर लग गई है। किन्तु मेरा मन इस शोकमय कथानक में सर्वथा लग गया था।

युवक — (सनोबर का गुलदस्ता हाथों में लिये हुए) यह मेरा अपराध है कि मैंने इन बातों को सुनाते हुए बहुत देर आपको ठहराये रखा। आइये, मैं आपको समीप का रास्ता बतला दूं। यह पगडंडी यद्यपि सर्वसाधारण

का मार्ग नहीं है और (एकाएक एक नौकर के आने से जिसके हाथ में कुछ पत्र थे चौकन्ना होकर और नौकर को संबोधन करके) क्या है?

नौकर — माई लार्ड, पत्र हैं (श्रीमानों ने इसी जगह लाने का हुक्म दिया था।

नौकर पत्र देकर नमस्कार करके विदा हुआ और ग्रेशिया ने देखा कि पते की जगह पर श्रीमान माननीय अलआफ् रैमूर लिखा है। जिससे ग्रेशिया ने यही परिणाम निकाला कि यही नौजवान लार्ड रैमूर है। नौजवान की इस चालबाज़ी से कि उसने अपने आप को प्रकट क्यों नहीं किया क्रोध के मारे ग्रेशिया पर एक रंग जाता था और एक आता था। जब नौकर चला गया तो ग्रेशिया ने धीरे से कहा —

ग्रेशिया — क्या श्रीमान ही लार्ड रैमूर हैं?

नवयुवक — जी हां, दास ही लार्ड रैमूर है। मिस साहिबा, मुझमें ऐसी क्षमा मांगने का साहस तो नहीं है, परन्तु मैं अपने अपराध की आपसे हार्दिक क्षमा मांगता हूं।

ग्रेशिया — (क्रोध से, लड़कपन के ढंग से) आपने मुझसे पहले क्यों नहीं कहा। (परन्तु रैमूर के शोकातुर और अनुतापयुक्त चेहरे को देखकर ग्रेशिया का क्रोध चला गया।)।

लार्ड रैमूर — मैं वास्तव में कुछ कह नहीं सकता। मेरी हालत यह है कि मैं अपनी कहानी को किसी को बतलाना ही नहीं चाहता था। दूसरे यह कि मैं आपको अपनी कहानी अवश्य सुनानी चाहता था। मेरा विश्वास था कि आप मुझसे सहानुभूति रखती हैं। परन्तु बात इससे विपरीत है। आपकी ओर से घृणा देखता हूं। मेरा कर्तव्य तो यह था कि मैं आपकी जिज्ञासा पर तुरंत ही कह देता कि मैं कौन हूं परन्तु आपके श्रीमुख से सहानुभूति के सच्चे शब्द और मेरी अवस्था पर शोक करने ने मुझ पर ऐसा अधिकार पाया कि मैं अपने आप को प्रकट न कर सका।

~~[illegible]~~ ग्रेशिया क्रोध से खड़ी होगई। परन्तु लार्ड रैमूर की ओर देखने से उसकी ओर का ध्यान करके क्रोध तत्काल दूर होगया।

ग्रेशिया — मैं इस घटना से आपकी दशा पर शोक करती हूं और आप को दया के योग्य समझती हूं। परन्तु आप स्वस्थ दिखाई देते हैं। मेरा अभिप्राय यह है — (आगे कुछ न कह सकी)

लार्ड रैमूर — आपका यही अभिप्राय है कि मैं ऐसा ही बलवान हूं जैसे कि दूसरे आदमी। बेशक ठीक है। परन्तु यह दशा बाहर से देखने की ही है। मिस साहिबा! मैं ने आपको अपनी सच्ची अवस्था सुना दी है।

ग्रेशिया — निस्सन्देह। मैं आपकी ओर से बहुत शोकातुर हूं और आपके साथ सहानुभूति रखती हूं।

रैमूर — (शीघ्रता से) फिर जो कुछ कहती हैं सिद्ध कीजिये।

ग्रेशिया — सिद्ध? वह किस प्रकार से।

रैमूर — हां, आप को याद होगा, आपने कहा था कि लार्ड रैमूर को अपने मित्रों को बुलवा लेना चाहिये जिससे कि वे उसको खुश रखें और तसल्ली देते रहें। आपने यह भी कहा था कि लार्ड रैमूर को मेरे पिता से मित्रता कर लेनी चाहिये। और मैं भी उसकी लक्ष्मी बन सकती हूं। अब यही मेरी प्रार्थना है, यद्यपि यह प्रार्थना सीमा को उल्लंघन कर गई है क्योंकि एक ऐसा व्यक्ति जो मृत्यु की प्रतीक्षा में हो किसी सूरत में भी प्रसन्नतादायक मित्र नहीं बन सकता।

ग्रेशिया — (स्वयं कांप कर) ऐसी बातें मेरे सामने न करें।

रैमूर — क्षमा कीजियेगा। अच्छा यदि स्पष्ट शब्दों से आप भय खाती हैं तो कोमल शब्दों में आपसे प्रार्थना करता हूं कि बीमार आदमी मित्रता के लिये उपयुक्त नहीं होता। परन्तु आप यदि अपनी उदारता और हार्दिक दया को (रुक कर, आपही) नहीं नहीं, मैं सर्वथा आपसे नहीं कह सकता। मैं एक नवयुवती कुलकामिनी को जिसने मेरा जीवन सुनकर ही आंसुओं की झड़ी लगादी, किस तरह मित्रता के लिये कहूं। (ग्रेशिया से) क्षमा कीजिये, मैं ने आपको रोते देखा था। हां, क्या एक दया के योग्य, शोकातुर व्यक्ति आपकी मित्रता की आशा रख सकता है। मैं जानता हूं कि जितना आप मुझसे मेलमिलाप पैदा करेंगी उतना ही आपका शोक दुगना होगा। (गुलदस्ता भेंट करके) लीजिये गुलदस्ता उपस्थित है। देखिये इसको लेने से इन्कार न करना। क्या आप अभी तक नाराज़ हैं?

ग्रेशिया गुलदस्ता लेकर कुछ कहना चाहती थी परन्तु वाणी ने साथ न दिया और बिना किसी विशेष बातचीत के अपने मकान की ओर चल दी। और लार्ड रैमूर उसको पथरन प्रालवरी की ओर जाता हुआ अनिमेष देखता रहा। रैमूर — (मनमें) हाय, कैसी लावण्यमयी सुन्दरी है और शुद्ध प्रेमभरा दिल है जिसमें दया और सहानुभूति कूट २ कर भरी है। मैं इससे अवश्य मित्रता

उसका करूंगा। किन्तु नहीं, कदापि नहीं। उत्तम होगा कि मिलूं ही नहीं। मैं कैसा मूढ़ हूं कि एक सुन्दरी युवती की वार्तालाप और सौन्दर्य से मुग्ध और विमूढ़ हो गया हूं। मैं तो कब्र के किनारे पांव लटकाये बैठा हूं।

४

"वह आयें घर हमारे खुदा की कुदरत है।
कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं॥"

ग्रेशिया आंसू पोंछते हुए अपने घर पहुंची। उस को लार्ड रैमूर की चेष्टा पर क्रोध आता था, परन्तु आत्मा अन्दर से धिक्कारती थी कि मरनेवाले पुरुष की चेष्टाओं पर क्रोध कैसा। और स्वयं उसे अन्तव्य समझने लगी। कहती थी "हाय, कैसी दुःखभरी कथा है। वह उसको बूढ़ा विचार कर दुःख करती थी। परन्तु अब जब कि उसने स्वयं अपनी आंखों से देखा तो वह एक नवयुवक बलिष्ठ पुरुष की इस अवस्था पर अधिक शोकातुर हुई। इसके अतिरिक्त ग्रेशिया के दिल में लार्ड रैमूर के लिये एक छुपा आकर्षण पैदा हो गया था। लार्ड महोदय का चेहरा उसको प्यारा मालूम होता था। और उसके चेहरे की करुणाजनक शोकातुर दशा ग्रेशिया को और अधिक अपनी ओर खींचती थी। उसको अनेक मनुष्यों से मिलने जुलने का प्रसंग हुआ था। फ्रांस में कुछ दोस्त, उसका पिता और अब लार्ड रैमूर पुरुषों में से उसके मिल गिने जा सकते थे। और यह एक अनिवार्य बात थी कि एक रूपवान, सुगठित देह वाले, नौजवान आदमी की ओर जिसकी कहानी ऐसी दुःखपूर्ण हो, उसका दिल स्वयमेव आकृष्ट हो। वह हर समय अपने ध्यान में उसे इसी तरीके पर देखती थी कि वह अपने सुविशाल महल में बैठा हुआ स्त्री की प्रतीक्षा कर रहा है। और यह दृश्य उसके चित्त को विषादपूर्ण कर देता था।

अभी वह खाने के कमरे में प्रविष्ट हुई ही थी कि मि० टैम्पेस्ट गोल कमरे से होता हुआ इसी कमरे में आया और कहने लगा,—

मि० टैम्पेस्ट—(ग्रेशिया को प्यार करके) पुत्री! मालूम होता है कि तुम बाहर सैर को गई थीं और फूल चुनती रही हो।

ग्रेशिया— पिताजी! मैं ने इन फूलों को स्वयं नहीं तोड़ा किन्तु ये लार्ड रैमूर ने मुझे दिये थे।

टैम्पेस्ट — लार्ड रैमूर ने ? (आश्चर्य से)

ग्रेशिया — (प्याले में चाय डालते हुए) हां पिताजी ! मेरी और लार्ड रैमूर की जंगल में मुलाकात हुई, अर्थात् लार्ड रैमूर के जंगल में।

टैम्पेस्ट — (हतोत्साह करने वाले ढंग से) तुम्हारा वहां क्या काम था ?

ग्रेशिया — मैं भूल से लार्ड महोदय के जंगल में चली गई थी। पिताजी ! मुझको यह मालूम न हुआ कि हमारा कौनसा जंगल है और उसका कौनसा।

टैम्पेस्ट — (अंगड़ाई लेकर) मैं हद्दबंदी कराने लगा था। परन्तु अब अवश्य करा लूंगा।

ग्रेशिया — पिताजी ! तुम कुपित तो नहीं हो। लार्ड रैमूर साहिब मुझसे अत्यन्त कृपा पूर्वक मिले थे। हाय पिताजी ! मुझको गरीब की दशा पर दया आती है।

टैम्पेस्ट — (बेचैनी से) निस्सन्देह, निस्सन्देह, यद्यपि मैं उस को नहीं जानता परन्तु हालात सुनने में अवश्य आये हैं।

ग्रेशिया — (गुलदस्तों को चीनी के गुलदान में सजाते हुए) पिताजी, आप उस को क्यों नहीं जानते, वह तो आपका, नहीं ~~हमारा~~ प्रत्युत हमारा समीपवर्ती पड़ोसी है। और बेचारा अकेला और बीमार रहता है।

टैम्पेस्ट — मुझको मालूम है। पुत्री ! मैंने तुमको रात नहीं कहा था कि मैंने अपने पुराने मित्रों तक से अलहदगी स्वीकार कर ली है। और इसके अतिरिक्त (कुछ रुककर) इसके अतिरिक्त क्या मैं भूल सकता हूं कि वह जमीन किसी समय में हमारी सम्पत्ति थी। क्या तुम यह विचार नहीं करती कि मैं उसी जमीन पर बिना दुःख उठाये क़दम रख सकता हूं। अभी तो तुमको कुछ मालूम नहीं है, परन्तु वह दिन दूर नहीं है कि जब संसार का अनुभव कर लोगी और फिर तुम भी मेरे समान विचार वाली हो जाओगी।

ग्रेशिया — (धीरे से) बेशक, मैं अभी से सहमत हूं। परन्तु प्यारे पिता ! ध्यान तो दें कि बेचारा लार्ड रैमूर किस संकट की दशा में है। उसने या उसके पिता ने आपसे जमीन खरीदी जरूर है, परन्तु चुराई तो नहीं।

टैम्पेस्ट — (दयार्द्र दृष्टि से पुत्री की ओर देखकर) तुम मुझसे क्या चाहती हो ?

ग्रेशिया — मैं यह चाहती हूं कि आप उसके पास जावें। उससे मित्रता पैदा करें। ऐसा न करने का कोई कारण हो तो आप बतलावें। मैं आपसे पूछती हूं कि यदि आप विपद्ग्रस्त हों और वह आपके पड़ोसी होते हुए बात भी न पूछे तो आपको कैसा बुरा मालूम होगा और आप क्या कुछ न कहेंगे।

टैम्पेस्ट — यह न कहो। अच्छा यदि तुम्हारी यही अभिलाषा है तो हम उससे मिलेंगे। मैंने तुमसे कहा न था कि मैं तुम्हारे लिये दोस्त तलाश करूंगा। मुझको गंवार मत समझो। परन्तु मैं यह विचार करता हूं कि लार्ड रैमूर से न मिलना ही उसके लिये लाभप्रद है। असाध्यरोगी को एकान्त की आवश्यकता होती है।

ग्रेशिया — (सादगी से) लार्ड रैमूर ने मुझसे कहा था कि हम उसके दोस्त बन जावें।

टैम्पेस्ट — (जिज्ञासा से) ओहो, तो तुमसे और उससे ~~इस~~ थोड़े समय में इतनी अधिक दोस्ती बढ़गई है।

ग्रेशिया — मेरा पहले तो यह विचार हुआ कि वह मुझको गोली मारने लगा है, परन्तु बाद में हम दोनों नरम होगये।

इस शब्द पर मि० टैम्पेस्ट कुछ चौकन्ना हुआ था कि ग्रेशिया ने सारा वृत्तान्त अक्षर २ कह सुनाया।

टैम्पेस्ट — तो मालूम होता है कि लार्ड रैमूर एक विचित्र मनुष्य है। यदि चलना ही है तो चलो आज सन्ध्या के समय ही चलें। परन्तु अनधिकारप्रवेश के लिये जो तुम से होगया है इतना शीघ्र क्षमा मांगने को उद्यत नहीं हूँ।

ग्रेशिया — (हंसकर) तुम बेचारे लार्ड रैमूर को ऐसा न पाओगे कि वह क्षमा देना न जानता हो।

इस वार्तालाप पर मि. टैम्पेस्ट ने चोर आंखों से अपनी पुत्री की ओर देखा और हाजरी खाकर पुस्तकालय में चला गया और एक समाचारपत्र उठाकर पढ़ने लगा। ग्रेशिया ने तलाश करके मिसिज़ सिल्हर को बुला लिया और मकान की देखभाल में मग्न होगई। मकान ग्रेशिया की आशा से अधिक बड़ा था और एक कमरे से दूसरे कमरे में, दूसरे से तीसरे में, कभी दूसरी मंजिल पर कभी नीचे के दीवानखाने में फिरती रही और प्रतिक्षण मकान की रद्दी हालत पर अश्रुपात करती रही। परन्तु प्रत्यक्ष में अपने दुःख को प्रसन्नता से बदले रही। उसको यह मालूम न हुआ कि मकान की मरम्मत और सजावट

की सामग्री के ठीक करने में कितनी अधिक द्रव्यराशि व्यय होगी।

मि॰ टैम्पेस्ट चिफ़न तक बिल्कुल बेपरवाह रहा। उसको यह भी ध्यान न रहा कि सायंकाल लार्ड रैमूर से मैं ने मिलने जाना है या नहीं। जब ग्रेशिया ने उससे पूछा कि आप किस समय चलेंगे तो एक ठंडी सांस भरने के अतिरिक्त बूढ़ा कुछ न कह सका। ग्रेशिया का विचार था कि हम पैदल छायादार वृक्षों और समीप के मार्ग से भ्रमण करते हुए चलें। परन्तु मि॰ टैम्पेस्ट ने अपनी गाड़ी तैयार कराई जो कि मील डेढ मील का चक्कर काटती हुई महल ग्रीनिच के द्वार पर जा खड़ी हुई। मि॰ टैम्पेस्ट ने पहले तो सुविशाल भवन की ओर देखा और फिर ग्रेशिया को सम्बोधन करके कहा कि क्या शानदार भवन है परन्तु ग्रेशिया ने स्वीकार में सिर हिला दिया और कुछ न कहा।

ग्रेशिया — पिताजी! जिस समय आप लार्ड रैमूर से मिलेंगे तो आप अवश्य खुश होंगे।

अभी ग्रेशिया कुछ विशेष कहने न पाई थी कि जैसप नौकर ने गाड़ी के दरवाजे को खोला। इसी बीच में लार्ड रैमूर भी अपने कमरे से निकल कर संगमरमर की सीढ़ियों से उतरकर गाड़ी के पास पहुंच गया था और इससे पूर्व कि शिष्टाचार के साधारण नियम बर्ते जावें, वह दोनों के स्वागत के लिये आगे बढ़ा। देखता है कि ग्रेशिया बहुत प्रसन्न है। अस्तु॰ लार्ड रैमूर ने तुरन्त हाथ देकर दोनों को गाड़ी से उतारा।

मि॰ टैम्पेस्ट को उसका यह स्नेह का व्यवहार ऐसा भाया कि जो बुरे विचार लार्ड रैमूर के विषय में उसके दिल में पहले थे वे अब लोप होने लगे।

लार्ड रैमूर (मि॰ टैम्पेस्ट से) आप का स्वागत है। आप का मेरे घर पधारना मेरे लिये सौभाग्य दायक है। आपके मिजाज कैसे हैं। मैं आपकी मुलाकात से अतीव उपकृत हुआ हूं। आशा है कि मिस साहिबा ने आपसे हमारी प्रातःकाल की मुलाकात का ज़िक्र किया होगा। आइये अन्दर तशरीफ़ ले चलिये।

मि॰ टैम्पेस्ट — (गोलकमरे में अपनी पुत्री और लार्ड रैमूर सहित जाते हुए) जी हां, मेरी कन्या ने आपकी भूमि में अनधिकार प्रवेश करने का मुझसे वर्णन किया है, और मेरा विचार था कि जितनी जल्दी हो सके मैं आप से क्षमा मांगूं।

लार्ड रैमूर — (प्रेम भरे ढंग से मुस्कराते हुए) ईश्वर को धन्यवाद है। इस बहाने से आपसे मुलाकात तो हो गई।

टैम्पेस्ट — (कुछ सख्त ढंग से) शोक, हदबंदी की बाड़ टूटी हुई है।

लार्ड रैमूर — (बात काटकर) इस विषय को इस समय जाने दें। प्रत्युत मेरा तो विचार है कि जंगले की मरम्मत ही न कराई जाये तो अच्छा है। क्योंकि यह बात हम दोनों के वास्ते अच्छी है। कभी २ मैं भी इसी ओर से आपके मकान को आते हुए अनधिकार प्रवेश करने का भागी हो जाया करूंगा।

मि० टैम्पेस्ट — (कमरा और खिड़कियों आदि को ध्यान से देखते हुए) भाई लार्ड, आपने मकान में प्रत्यक्ष उन्नति की है।

रैमूर — आप उसको उन्नति कह लें परन्तु मुझ को इस से अवश्य सुख प्राप्त होता है। (कुछ देर ठहर कर और वार्तालाप का ढंग बदलकर) हां मिस साहिबा! आप चाय तो अवश्य पियेंगी। फ़र्माइये, चाय इसी जगह पान करेंगे या दूसरे दालान में। मैंने कुछ चित्र दूसरे कमरे में लटकाये हैं, मैं आपको वे दिखाना चाहता हूं।

नौकरों ने पूर्व से ही चाय के मेज़ पर सफेद चादर बिछा दिये थे। अब लार्ड रैमूर ने एक बहुमूल्य कुर्सी को जिस पर चमड़े का गालीचा चढ़ा हुआ था अपने हाथ से झाड़ा, और नम्रभाव से मि० टैम्पेस्ट से कहा कि आप यहां विराजिये। और फिर सभ्यता से मुस्कराते हुए मि० टैम्पेस्ट से निवेदन किया कि वे सभापति की हैसियत से चाय पिलावें।

इधर ग्रेशिया ने एक आरामकुर्सी को जो लार्ड रैमूर ने पहले से ही उसके आगे रख दी थी, मेज के निकट सरकाया और अपने दस्ताने को उतार चाय पान में सम्मिलित हो गई। वह अपने इर्दगिर्द की वस्तुओं को ध्यानपूर्वक देखती जाती थी और कमरे की सुन्दरता और अमीरी ठाठ पर दिल ही दिल में प्रशंसा और साधुवाद कर रही थी। सजावट का सामान बहुत बढ़िया किस्म का था जिस का रंग बिलकुल हल्का था। पर्दे हल्के किस्म के आसमानी रेशम के थे। सीढ़ियां और सीढ़ियों का जंगला सब बहुमूल्य संगमरमर का था जिस पर स्थान २ पर हरे रंग के पत्थरों के फूलपत्ते बने हुए थे। इस कमरे में कोई पत्थर का, पीतल का या चीनी की मूरत या बुत नहीं था परन्तु पुराने ज़माने के हस्तनिर्मित चित्र जो कमरे की शान और सौन्दर्य को द्विगुणित कर रहे थे, लटक रहे थे। चौखटे जो चित्रों पर लगाये गये थे वे भी उत्कृष्ट

कारीगरी का एक पूरा नमूना थे। कमरे के एक कोने में एक बड़ा पियानो बाजा रखा हुआ था। ग्रेशिया को (अनुभव न होने के कारण) यह महल अजायबघर मालूम होता था।

लार्ड रैमूर — (मिस टैम्पेस्ट से) लीजिये, चाय हाजिर है। मैं भी आपकी सहायता करता हूं। (नौकर को संबोधन करके) अब तुम्हारी आवश्यकता नहीं है। (फिर मिस टैम्पेस्ट से स्नेहभरे ढंग से अपने स्नेह के जोश को रोकते हुए) कृपा करके मुझको चाय पीने से क्षमा कीजिये, मैं केवल दूध पिऊंगा। (मि० टैम्पेस्ट को चाय का प्याला देकर) केवल दूध और कुछ पानी।

ग्रेशिया — निस्सन्देह, चाय आपके लिये अपथ्य होगी, चाय न पीवें।

लार्ड रैमूर — (एक सुन्दर ईरानी बिल्ली को आते देखकर) देखो फ़्लास (बिल्ली का नाम) तो आगई। मिस टैम्पेस्ट सच कहना, क्या आप बिल्लियों से घृणा करती हैं?

ग्रेशिया — हैं, मुझको और बिल्लियों से घृणा। क्या प्यारी बिल्ली है। यह कहकर ग्रेशिया ने झुककर बिल्ली से खेलना शुरू कर दिया और उस को गोद में लेकर उसके नरम २ बालों को अपने गालों से मलने लगी।

लार्ड रैमूर — (मुस्कराकर) बिल्ली के इस बार तुम्हारे ऐसा करने से खूब बाल निकलेंगे। (एक कुत्ते को आता देखकर) लो और देखो, दूसरी बेहूदगी भी कमरे में आगई। परन्तु नहीं मिस टैम्पैस्ट मैं उसको यहां से निकाले देता हूं।

ग्रेशिया — नहीं नहीं, ऐसा न करना। यह फ़्लोस से भी अधिक सुन्दर है। (बिल्ली का नाम ग्रेशिया ने इस इरादे से लिया मानों उसे इस बिल्ली से चिरकाल से स्नेह है)। अहा, क्या प्यारा कुत्ता है। और देखो उसकी आंखें कैसी मस्त हैं। यह कहकर ग्रेशिया ने कुत्ते को अपने पास बुलाया और बिस्कुट और रोटी का टुकड़ा उसे खिलाया। (लार्ड रैमूर दिल ही दिल में खुश हो रहा था कि मिस्टर टैम्पेस्ट ने अपनी बातीलाप से उसको अपनी ओर संबोधित किया।

मि० टैम्पेस्ट — लार्ड रैमूर? हमने इतना ठहर कर आपका समय नष्ट किया है। अब आज्ञा दीजिये और ~~[illegible]~~ तकल्लुफ़ को छोड़कर आप यह फ़र्माइये कि यदि आपने किसी दूसरे से वायदा नहीं किया तो क्या आप कल सायं को खाना हमारे साथ खाना पसन्द करेंगे?

रैमूर — (कुछ देर करके और रुककर) मैं आपके निमंत्रण का अनुगृहीत हूं परन्तु मैंने कभी बाहर खाना नहीं खाया। (अचानक ग्रेशिया से आंखें मिलाके) परन्तु मैं अनुगृहीत हूंगा यदि आप लोग मेरी करुणाजनक अवस्था पर दया दिखाकर कल सायंकाल खाना मेरी कुटी में ही खावें।

टैम्पेस्ट — (लार्ड रैमूर के बलिष्ठ देह को संदिग्ध दृष्टि से देखते हुए साभिमान) मालूम होता है कि आप सायंकाल की शीतल पवन से डरते हैं। अच्छा मैं आपका निमंत्रण स्वीकार करता हूं।

रैमूर — कल ठीक आठ बजे सायंकाल में। मैं आपका अत्यन्त अनुगृहीत हूं।

टैम्पेस्ट — (उठकर) चलो बेटी घर चलें।

रैमूर — कल के खाने की पक्की रही ना। ईश्वर जानता है कि मैं किस शौक से उस समय तक प्रतीक्षा में रहूंगा।

अभी यह वाक्य समाप्त न होने पाया था कि कमरे का द्वार खुला और एक पुरुष अन्दर प्रविष्ट हुआ। यह अकड़ की चाल चल रहा था। परन्तु अन्दर बैठे लोगों को देखकर ठिठका और कभी एक को कभी दूसरे को देखने लगा। निस्सन्देह वह खूबसूरत नौजवान और फैशनेबल था। परन्तु उसकी चाल ढाल ग्रेशिया को सर्वथा न भाई।

उसने इस नौजवान के चेहरे से निगाह उठाकर लार्ड रैमूर को देखा कि लार्ड महोदय इसके ~~लिये~~ आने से कुछ अप्रसन्न हैं और चेहरे पर क्रोध की झलक मारती है।

नया मुलाकाती आगे बढ़कर — अहा रौल्फ कैसा मिजाज है?

लार्ड रैमूर — (इशारे से) धन्यवाद है। सालिस्बरी! कहो मिज़ाज कैसा है? कृपा करके पुस्तकालय में चलो, मैं आता हूं।

परन्तु ग्रेशिया ने लार्ड रैमूर की इस उपेक्षाभाव को ध्यानपूर्वक देखा और मौन हो गई। और नौजवान आदमी नमस्कार करके हतप्रभ सा हुआ पुस्तकालय की ओर चला गया। उसको जाने के ~~पश्चात्~~ बाद लार्ड रैमूर अपने अतिथियों के साथ द्वार तक गया। उसका चेहरा वैसा ही पीला था और दिल में बेचैनी मालूम होती थी। उसने ग्रेशिया को सहारा देकर गाड़ी में जो पहले से ही तैयार खड़ी थी बिठाया और बड़ी नम्रता से कहा —

रैमूर — मैं किस वाणी से आप के यहां पधारने का धन्यवाद प्रदान करूं। कल के प्रण को भूल न जाना॥

५ परिच्छेद ५

लार्ड रैमूर गाड़ी की ओर देखता रहा, जब तक कि वह दृष्टि से ओझल न हो गई। फिर कमरे में वापिस आया और जिस कुर्सी पर ग्रेशिया बैठी थी उसको प्रेमभरी दृष्टि से देखता रहा। रैमूर को यह भी ध्यान न रहा कि मुझसे कोई मिलने आया है जिसको मैं ने पुस्तकालय में भेज दिया है। परन्तु तत्काल ही उसको ध्यान आ गया और ठण्डी सांसे भरता हुआ पुस्तकालय में प्रविष्ट हुआ। यह व्यक्ति जो पुस्तकालय में एक आरामकुर्सी पर बैठा हुआ सीटी बजाता जाता था और एक हलकी सी लकड़ी से अपने पैर पर ताल देता जाता था, लार्ड रैमूर का फूफीज़ाद भाई था। अर्थात् वर्तमान लार्ड के पिता की असली बहन का पुत्र था। दोनों भाइयों में प्रेम नाम को न था। लार्ड रैमूर एक भद्र पुरुष था परन्तु स्टीफ़न सालिट्श उससे बिल्कुल उलटा था। यद्यपि अधिक समयों में वह अपने आपको शरीफ़ बना लिया करता था। यह व्यक्ति फ़िज़ूलखर्च, जुआरी और बचपन से ही विलासिता में पड़ गया हुआ था। घुड़दौड़ और खेल तमाशे में उसका अभ्यास निस्सन्देह बढ़ा हुआ था। वह तीन अच्छी सभाओं का सभासद भी था और कुछ ऊंचे घरानों में आता जाता भी था। प्रायः सभाओं में शामिल भी होता था। परन्तु नेक और सच्चे आदमी उसको संदिग्ध दृष्टि से देखते थे। और भद्र सदाचारिणी लेडियां उस से कोसों दूर भागती थीं। वे उससे ऐसी उपेक्षा से मिलती थीं जैसे नेकी बदी से। यह कहना अनुचित न होगा कि यह आदमी प्रत्यक्ष में शरीफ़ परन्तु अन्दर से धूर्त था। अपने मतलब से मतलब रखता था और दुराचरण करने के लिये अपने को राजनियम के चक्कर से बचाता फिरता था। स्वर्गवासी लार्ड (लार्ड रैमूर के पिता) ने इसकी माता की दरिद्रता का विचार करके एक पर्याप्त राशि छात्रवृत्ति के रूप में नियत कर दी थी और स्वर्गीय लार्ड के मरने पर वर्तमान लार्ड (रैमूर) ने उस वज़ीफ़े को नियत रखा था। यह वज़ीफ़ा एक पर्याप्त धनराशि थी परन्तु स्टीफ़न जैसे फ़िज़ूल खर्च के लिये सर्वथा अपर्याप्त था। वह सर्वदा रैमूर से सहायता मांगने आया करता था और सच पूछो तो लार्ड रैमूर ने आज तक इन्कार भी न किया था। प्रारंभ में तो लार्ड रैमूर ने उसको जीवननिर्वाह का ढंग, उसकी और उसके मित्रों के स्वभाव, अधिक मद्यपान के विषय में उसको बहुत कुछ उपदेश दिया। परन्तु यह देखकर कि वह चिकना घड़ा है और उपदेश देने से

कुछ लाभ नहीं, कुछ देर से मौन धारण कर लिया था। ज्योंही लार्ड रैमूर कमरे में प्रविष्ट हुआ, पुस्तकों की सजावट और कमरे की सुन्दरता में ऐसे प्रतिकूल व्यक्ति को बैठे देखना लार्ड रैमूर को असह्य प्रतीत हुआ। स्टीफन्सन भी दिल में यह बात ताड़ गया और कुछ उपेक्षा और कुछ घृणा से जो उसकी आंखों से टपक रही थी पहचान कर कहने लगा –

स्टीफेन्सन — रौल्फ? मैं आपको कष्ट देने के लिये क्षमा चाहता हूं। क्षमा करना मैं बेसमय आया हूं। तुम्हारी मुलाकाती कौन थे? क्या सुन्दर नौजवान लड़की थी।

रैमूर — वे मेरे पड़ौसी हैं। हां, तुम मुझसे मिलने के उद्देश्य से आये हो?

स्टीफ० — जी हां, मुझको ध्यान आया कि चलो एक दो दिन तुम्हारे पास ही बिताऊं। मेरा असबाब आदि तो रेलवे स्टेशन वाले एशबिन से भेज देंगे।

रैमूर — (आतिथ्य करता हुआ) अच्छी बात, मैं नौकरों से कहकर तुम्हारा कमरा ठीक कराये देता हूं।

यह कह कर रैमूर ने घंटी बजाई और नौकरों को आवश्यक बातें कह दीं।

स्टीफ० — वास्तव में तो मैं अपने मतलब से तुम्हारे पास आया हूं। भाई रौल्फ! मैं आजकल आर्थिक कष्टों में फंसा हुआ हूं।

इस बात पर रौल्फ अंगीठी के पास जा खड़ा हुआ और घृणा से स्टीफन्सन की ओर देखने लगा।

स्टीफ० — (जंभाई लेकर) बात यह है कि मेरा भाग्य आजकल कुछ पलट हुआ है। तुमको विदित होगा कि पोलसन के घोड़े ने धोखा दिया।

रैमूर — नहीं, मुझको विदित नहीं। अब मैं घुड़दौड़ के विचार से ही कोसों दूर भागता हूं।

स्टीफ० — हां, अच्छी बात है यह है कि इस अवसर पर हमको बिल्कुल पूरा २ भरोसा था किन्तु शोक! एक रात दौड़ से पहले ही घोड़ा लंगड़ा हो गया और हम लोग बहुत कुछ हार गये। यार लोग तो और की और ही कहते हैं। खैर० बात यह है कि सोमवार के दिन मैंने लोगों से चुकाने का वायदा कर लिया है किन्तु मेरे पास रुपये की कुछ कमी है।

स्टीफ० — तुम घुड़दौड़ को सर्वथा त्याग ही क्यों नहीं देते? मैंने कभी नहीं सुना कि तुमने कुछ लाभ प्राप्त किया हो। इसके सिवाय तुम्हारे निजके एक दो और

भी बुरी अफवाहें उड़ी हुई हैं। मुझको इस से क्या। बतलाओ कितनी राशी आवश्यक है।

स्टीफ० — मेरा विचार है कि २००० दो हजार पौंड काफी होंगे।

रैमूर — दो हजार पौंड? ३० हजार रुपये? स्टीफन यह बड़ी राशी है किन्तु परवाह नहीं, मैं तुमको दूंगा।

स्टीफन — रैल्फ? तुम्हीं भले आदमी हो। मैं तुम्हारा कृतज्ञ हूं और तुमसे लज्जित हूं। ईश्वर वह दिन करे कि मेरे दिन फिरें और मैं तुम्हें तुम्हारा रुपया वापिस देकर उऋण होऊं।

रैमूर — (दो हजार पौंड का चैक लिखकर स्टीफन को देते हुए) इसको लौटाने की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं तुमको यह राशी दान दे रहा हूं ऋण नहीं दे रहा। परन्तु मेरी यह अभिलाषा है कि यह राशी तुम किसी अच्छे काम में लगाओ। डरो मत, मैं तुमको उपदेश देना नहीं चाहता।

स्टीफन — (चैक को जुएबाज़ी की पुस्तक में रखकर) यार यदि उपदेश भी देलो तो क्या हर्ज है।

रैमूर — अच्छा तो फिर यह बतलाओ कि इस खेल में तुम्हें कुछ प्राप्त भी हुआ है?

स्टीफन — (व्यंग्य से) कौन सा खेल?

रैमूर — मैं स्वयं नहीं जानता और मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि ईश्वर करे कि तुम्हारे विषय में यह झूठ हो। परन्तु तुम यह बतलाओ कि रुपया और यश को खोकर तुम को क्या मिला?

~~रैमूर — हां (क~~

स्टीफन — (क्रोध से उच्चस्वर से) ~~इज्जत इज्जत~~ यश, यश, तुम्हारा क्या मतलब है?

रैमूर — हां, यश। यद्यपि मैंने इन व्यसनों से अलहदगी ग्रहण करली है परन्तु अखबारों में प्रायः तुम्हारे विषय में लिखे हुए वाक्य देखे हैं जिनमें कि तुम्हारा नाम बहुत ही बुरे अर्थों में लगाया गया था और अब भी उन्हीं अर्थों में है।

स्टीफन — बेईमान! अच्छा, यदि अवसर मिला तो मैं इन हरामजादों के विरुद्ध मानहानि का दावा दायर कर दूंगा।

रैमूर — निस्सन्देह, झूठ होगा। परन्तु स्टीफन यदि ऐसा न होता तो वे अखबारों में न छापते। जाने दो मुझको इससे क्या? "आग खाओ अंगारे हगो" वाली कहावत है। किन्तु यह तो बतलाओ कि तुमने कभी भविष्य का विचार भी किया है?

स्टीफन— तुम्हारा क्या अभिप्राय है?

रैमूर— मेरा अभिप्राय पिता के वसीयतनामे से है। तुमको मालूम है कि यदि मैं विवाह न करूं तो इस सारी सम्पत्ति वा जायदाद के तुम अधिकारी बनोगे। और इस पुस्तक के अतिरिक्त सब कुछ तुम्हारे अधिकार में होगा।

स्टीफन — बेशक, मुझको मालूम है। (कुछ छिपाकर) परन्तु पहले तुम विवाह करने से कब चूकोगे?

रैमूर— नहीं। तुमको मालूम है कि मेरी मृत्यु का दिन नियत हो चुका है। आज मरा कल दूसरा लो। सिवाय बेवकूफ या किसी आवारा मिजाज के कौन ऐसा व्यक्ति होगा जो ऐसी दशा में विवाह करे। सोचो तो कि कौन सा ऐसा पुरुष होगा जिसको फांसी देने वा गोली मारने का हुक्म हो चुका हो और फिर भी वह विवाह करे।

स्टीफन — (नकली संतोष से खुशी को दबाकर) रौल्फ, ईश्वर की शपथ है - मैं सच कहता हूं कि इस विषय में मैं सदा शोकातुर रहता हूं।

रैमूर— मैं तुम्हारी सहानुभूति का कृतज्ञ हूं। मैं विवाह नहीं करूंगा और यह अवश्यम्भावी है कि मेरे बाद तुम ही उत्तराधिकारी बनोगे। तुम एक ~~धन~~ धनाढ्य पुरुष बन जाओगे और देश के रत्न कहाओगे। तुम्हारी स्थिति पर लोग ईर्ष्या करेंगे। स्टीफन! तुम एक चतुर पुरुष हो और अपनी चालाकी और शारीरिक सामर्थ्य से देश के भद्र पुरुषों में ऊंचा स्थान प्राप्त कर सकते हो। ऐसी सभाओं में जहां तुम्हारी पहुंच न हो तुम्हारा धन तुमको ले जायेगा। फिर मैं तुमको यह बतलाना चाहता हूं कि वर्तमान अवस्थाओं में यदि तुम अमीर भी हो जाओ तो वे लोग तुम्हारी वर्तमान जीवनयात्रा के ढंग से तंग आकर तुम से मुंह फेर लेंगे।

स्टीफन — भगवान जाने, तुम्हारा अभिप्राय क्या है। मैं तुमको बताना चाहता हूं कि सैकड़ों आदमी मुझसे भी खराब हैं।

रैमूर— तुम्हारी ~~सोसाइटी में~~ तुम्हारे जैसे जरूर तुमसे खराब होंगे। परन्तु जब तुम इस सीढ़ी पर, जिस पर तुम मेरे बाद चढ़ोगे तो तुमको उनसे कई गुणा अच्छा बनना पड़ेगा। मैं केवल इस कारण से तुम को यह नसीहत करता हूं कि मैं वह समय नहीं भूला हूं जबकि मेरे पिता ने वर्षों ही घोर कठिनाइयां उठाकर इस रुपये और सम्पत्ति को प्राप्त

किया और मुझे यह बुरा प्रतीत होता है कि यह रुपया चोरी मोरी के रास्ते बहाया जाय या चोर यार उड़ायें।

इस उपदेश पर स्टीफन लार्ड रैमूर की ओर जो एक बुत की तरह खड़ा हुआ था और स्टीफन के आन्तरिक भावों को बुद्धि की तुला पर तोल रहा था, देखकर मज़ाक के तौर पर बोला —

स्टीफन — क्या अच्छा उपदेश है। रैल्फ़, तुमको तो किसी गिर्जे का पादरी बनना चाहिये था। जितना भी उपदेश दो थोड़ा है। कारण यह है कि तुम अमीर हो और मैं गरीब हूं। यदि तुम भी मेरे जैसे गरीब होते तो शायद मुझसे भी अधिक बिगड़े हुए होते।

रैमूर — शायद होता। परन्तु क्षमा कीजिये, मैं कदापि ऐसा न होता। मैं अपने उपदेश को समाप्त करता हूं। जब तक मैं जीवित हूं जितना रुपया तुमको आवश्यक होगा मैं दूंगा। मेरे मरने के बाद तुम मालिक हो। (कुछ रुक कर) मैं और कुछ कहना नहीं चाहता। आप अब अपने नियत कमरे में जा सकते हैं, आशा है नौकर आपका सामान ले आये होंगे।

स्टीफन — मैं अत्यन्त अनुगृहीत हूं।

स्टीफन ने धन्यवाद इस प्रकार अदा किया मानो कोई कठोर बातें या नाराजगी आपस में नहीं हुई है। कमरे से जाते समय स्टीफन ने लार्ड रैमूर को अत्यन्त घृणा से देखा। लार्ड रैमूर ने भी एक शीशे में से जिसके सामने वह खड़ा हुआ था स्टीफन के प्रतिबिम्ब से उसके मानसिक विचारों का अनुमान किया। अभी थोड़े मिनट भी स्टीफन को गये हुए नहीं गुजरे थे कि भृत्य ने मि० हारवुड के आने की सूचना दी। यह मि० हारवुड लार्ड रैमूर का कानूनी सलाहकार था और लार्ड रैमूर के बाप के समय से उसका ~~पुराना~~ सलाहकार और मित्र चला आता था। लार्ड रैमूर सदा उससे मिलकर खुश होता था। बस नौकर की इस सूचना पर लार्ड रैमूर ने उसको आज्ञा दी कि मि० हारवुड को अन्दर आने दो। मि० हारवुड एक पुराने ढंग के खानदानी बैरिस्टर थे। वे दूरदर्शी, स्वच्छ हृदय और पवित्र थे। ज्योंही कि बैरिस्टर साहब अन्दर आये लार्ड रैमूर ने अत्यन्त प्रेम और आदर से मुलाकात की।

रैमूर — हारवुड? मुझको तुम्हारे आने से अत्यन्त प्रसन्नता हुई है। (~~[illegible]~~) विराजिये।

हारवुड — (एक आराम कुर्सी पर बैठते हुए) यार रैमूर! मैं एक आवश्यक काम के लिये तुम्हारे पास आया हूं।

रैमूर— वह कौनसा काम है जरा मैं भी सुनूं?

हारवुड— भई वह तुम्हारे पड़ोसी मि० टैम्पेस्ट मालिक महल पवटन प्राल्टरी के विषय में है। मेरा विचार है तुम उससे अपरिचित हो।

रैमूर— नहीं मैं उनको जानता अवश्य हूं। अभी थोड़ी देर हुई वे यहीं थे।

हारवुड— आश्चर्य है। उसकी अवस्था तो दयनीय है।

रैमूर— क्योंकर, क्या कोई मामला उसके विपरीत है?

हारवुड— बहुत कुछ। मालूम होता है कि तुम को उसके हालात से परिचय नहीं है।

रैमूर— बहुत कम। हां आज शाम को उसके चेहरे से शोक के चिन्ह अवश्य प्रकट होते थे।

हारवुड— शोकाकुल होने का कारण क्या कम है? सुनिये, टैम्पेस्ट खानदान किसी समय में इस ओर सब में बढ़ा हुआ था और प्राल्टरी इस खानदान का प्राचीन निवास का महल था। परन्तु 'सब दिन जात न एक समान', वह सब हालात बदल गये। मैं पीढ़ियों तक इस खानदान के लगातार रुपया नष्ट करने और वर्तमान मि० टैम्पेस्ट के पिता के रुपये को, जो कुछ भी शेष रह गया था, कौड़ियों के मोल लुटाने और पानी की तरह बहाने को खूब जानता हूं। जायदाद उत्तराधिकार से रहित थी। यद्यपि पिता से सर्वदा पुत्रों को उत्तराधिकार में आती रही या भतीजे चचा के उत्तराधिकारी बनते रहे। पीढ़ियों तक यही हाल रहा। यहां तक कि भूमि का चप्पा २ गिरवी हो गया। ऐसे जब कि भूमि की कीमत चढ़ी हुई थी कुछ हानि न पहुंचती। क्योंकि यदि बिक भी जाती तो शेष रुपये से टैम्पेस्ट खानदान बड़े आनन्द से रह सकते थे। अब भूमि के दाम बहुत घट जाने से वह हालत हो गई है कि अमीर से अमीर भी कुछ नहीं कर सकते। और फिर टैम्पेस्ट जैसे खानदान का जो कि अत्यन्त फिजूलखर्च है, भगवान ही रक्षक है। (जरा रुककर) मुझको भय है कि गरीब बुड्ढा टैम्पेस्ट बिल्कुल बर्बाद हो चुका है। मेरा अपना निश्चय है कि ऐसी दशा में उसके भाग्य में एक कौड़ी भी न पड़ेगी। यह एक दुःखभरी गाथा है। और विशेष करके इस कारण से कि गरीब के घर में एक नवयुवती कुमारी पुत्री बिन ब्याही विद्यमान है।

रैमूर यह गाथा सुनते २ उन्हीं विचारों में चिन्तित खड़ा हो गया। उसको बार २ मिस टैम्पेस्ट का ध्यान आता था। जिसको लार्ड रैमूर ने अपने लिये प्रेम से आंसू बहाते देखा था। और जिसका चित्र उस समय से उसकी आंखों के सामने फिर रहा था। यहां तक कि

*/. मिस्टर साल्टश के साथ वार्तालाप करते हुए भी वह रैमूर के नेत्रों के सामने थी।

मि० हारकुड — (फिर वही बात आरंभ करते हुए) मुझको अभी २ उस इलाके को गिरवी से छुड़ाने से रोकने का संदेशा मिला है। मुझको तुरत यह विचार पैदा हुआ कि उत्तम हो कि तुम उसको खरीद लो।

रैमूर — (कुछ रुककर) तुम्हारा विचार है कि उसके खरीदने से मि० टैम्पेस्ट को कुछ लाभ पहुंचेगा।

हारकुड — नहीं, सर्वथा नहीं। ऐसा करने से उसको कुछ लाभ नहीं पहुंचेगा क्योंकि यदि तुमने उस इलाके का दाम बाजार की दर के अनुसार दिया तो उस धन के ऋण चुकाने के बाद मि० टैम्पेस्ट के पास कुछ भी न बचेगा। परन्तु तुम उस इलाके को खरीदकर उसको यहूदियों के चुंगल से निकाल सकते हो।

रैमूर — परन्तु इससे भी मि० टैम्पेस्ट को कुछ लाभ नहीं पहुंच सकता।

कहने को तो लार्ड रैमूर ने कह दिया किन्तु वह अपने ध्यान में मि० टैम्पेस्ट को देख रहा था कि बुड्ढा अपनी सुन्दर और कोमल हृदय वाली कन्या के हाथ पकड़े हुए बेचारो मददगार अपने महल से अकेला निकल रहा है और दरिद्रता की साक्षात् मूर्त्ति बना हुआ है।

हारकुड — नहीं, बुड्ढे को आपसे कुछ लाभ नहीं पहुंच सकता। प्यारे रैमूर! मैं जानता हूं कि तुम्हारे दिल में इस समय क्या गुजर रही है। तुम्हारा सुकोमल हृदय वाला वंश टैम्पेस्ट को बरबादी से बचाने के लिये तड़प रहा है, परन्तु मित्र! आप नहीं बचा सकेंगे। बुड्ढा मरना स्वीकार कर लेगा परन्तु उसका स्वाभिमानी हृदय तुमसे या किसी दूसरे से सहायता लेना स्वीकार न करेगा। नहीं, तुम उस की कुछ सहायता नहीं कर सकते।

रैमूर — (ठंडी सांस भरकर) क्या हम बूढे को बरबादी से नहीं बचा सकते? यदि इस प्रकार मैं मि० टैम्पेस्ट की सहायता नहीं कर सकता तो मेरा इस जायदाद को खरीदना निष्फल है।

हारकुड — हाय, उस की कन्या का क्या हाल होगा। शायद तुमने उसको नहीं देखा। वह भी अपने पिता के साथ यहां आई थी। क्या

रैमूर — हां मैंने देखा है, प्यारी सूरत है।

हारकुड — टैम्पेस्ट वंश में सब ही सुन्दर हुए हैं। वही सोचता हूं कि

रैमूर — और जैसी वह सुंदर है वैसी ही सदाचारिणी भी है। उसकी क्या दशा होगी?।

गरीब

हारवुड — निस्सन्देह, उस गरीब की क्या दशा होगी। देखो, मनुष्य जीवन में भी सारंगी की स्वरों के समान कैसे उतार चढ़ाव हैं। ध्यान तो करो पहले एक प्राल्यरी महल में रहनेवाली लड़की हो और किसी घराने में नौकरानी की तरह नौकरी करे। अच्छा, अब मैं बिदा होता हूं, खाना न खाने की क्षमा मांगता हूं।

रैमूर — शोक है कि आज स्टीफन सालिश भी यहां आया हुआ है। तीन मिल कर एक कम्पनी हो जाती है, और दो आदमी किसी काम के नहीं होते।

हारवुड — मैंने उसकी बहुत सी विचित्र कथाएं सुनी हैं। भगवान जाने सच्ची हैं या झूठी हैं। मेरा विचार है कि वह रुपया बरबाद कर रहा है। मैं सोचता हूं कि तुम ही उसके साधन होते होगे।

रैमूर — (बेपर्वाही से हंसकर) क्या हर्ज है; वह शीघ्र ही इस विरासत पर काबिज होने वाला है।

इस वार्तालाप के पीछे मि० हारवुड चला गया और लार्ड रैमूर कपड़े पहनने में लग गया। परन्तु उसके हृदय से मिल्टम्पेल्ह और विशेषकर के ग्रेशिया का ध्यान दूर न होता था। और वह खाना खाने के कमरे में — जहां कि सालिश उसकी प्रतीक्षा कर रहा था, न आया, उसके मस्तिष्क में वही विचार रहे। सालिश तो पुस्तकालय में ही उस वार्तालाप को भूल गया था। और वह कुछ सुप्त दिखाई पड़ रहा था। उसने यत्न भी किया कि रैमूर को प्रसन्न करे परन्तु रैमूर तो अपने ही विचारों की उधेड़ बुन में लगा हुआ था। सालिश उत्कृष्ट शराब का आनन्द लेने लगा और कहने लगा।

सालिश — तुम मेरा कुछ खयाल कल प्रातः मत करना। मैं सवार होकर जाऊंगा और संभवतः सायंकाल के खाने पर आजाऊंगा। यदि तुमको खयाल न हो तो मैं एक रात और ठहर जाऊंगा।

रैमूर — (आतिथ्य से) मुझे बिल्कुल कुछ खयाल न होगा। मिस्टर और मिस टैम्पेल्ह जिन को तुमने आज देखा था वे कल खाना खाने आवेंगे। अच्छा, अब मैं अपने कमरे में जाता हूं। नौकर तुम्हारे लिये सिगार आदि जिस वस्तु की भी तुम को आवश्यकता होगी बिलियर्ड वाले कमरे में पहुंचा देंगे।

सालिश — (सिर हिलाकर) अच्छी बात। जिस समय रैमूर चला गया और दरवाज़ा बन्द कर गया तो सालिश स्वयं कहने लगा — यह मरना मरवा तो हर समय

पुकारता रहता है परन्तु ऐसा दिखाई नहीं देता। यदि मुझको इसका हाल मालूम होता तो मैं तो निस्सन्देह यही कहता कि ऐसा तो दीखता है जैसे कोई पहलवान हो। परन्तु धन्यवाद है भगवान का कि वह अधिक काल तक जीवित नहीं रह सकता।

छठा परिच्छेद

दूसरे दिन ग्रेशिया प्राल्टी में बड़ी आनन्द प्रसन्न इधर उधर फिरती रही। वह फ्रांस से यहां घर पर आकर कुछ खुश न हुई थी क्योंकि उस का पिता ऐसा शोकातुर सा दिखाई देता था। मकान में भी बहुत बेरौनकी थी परन्तु इस समय उसकी कुछ और ही तकलीफ़ थी। वह यद्यपि कुछ चिन्तित रहती थी परन्तु इस समय उसने सबसे सुन्दर पोशाक निकाली, इस विचार से कि लार्ड रैमूर के आलीशान महल में वह प्रतिष्ठित महिला प्रतीत हो। सायंकाल को मि॰ टैम्पेस्ट और मिस टैम्पेस्ट को रवाना होने में कुछ देर भले ही हो गई थी और गाडी यद्यपि तेज़ चाल से चल रही थी परन्तु ग्रेशिया को ऐसा प्रतीत होता था कि वह रींगती हुई धीरे २ ही चल रही है। अन्त को वे ग्रीनिच पहुंच ही गये। लार्ड रैमूर सन्ध्या की पोशाक पहन उनकी प्रतीक्षा में खड़ा हुआ था। इस भेस में वह शालप्रांशु (ऊंचे क़द वाला) पुरुष आप ही अपना उदाहरण बना हुआ था। उसकी आंखें स्वच्छ थीं और ग्रेशिया पहली मुलाक़ात की अपेक्षा आज उसे कम आयु का समझने पर मजबूर हो रही थी। साधारण कुशल क्षेम पूछने के बाद मि॰ टैम्पेस्ट ने कहा —

मिस्टर टैम्पेस्ट — मुझको शोक है कि हम देर से पहुंचे हैं।

रैमूर — कदापि नहीं। अभी आठ बजे हैं और आप ही ऐसे नहीं हैं जो सबसे अन्त में पहुंचे हो। मेरी बुआ का पुत्र मि॰ लालिश अभी तक नहीं आया है। परन्तु हम उसकी प्रतीक्षा नहीं करेंगे। इस वार्तालाप के बीच में ही एक नौकरानी आवश्यक हाज़िरी और मिस ग्रेशिया को अतिथियों के कमरे में लेकर चली और लार्ड रैमूर और मिस्टर टैम्पेस्ट ड्रायंगरूम में ही खड़े रहे।

रैमूर — (खिड़कियों से पर्दा सरका कर) अहा क्या चाँदनी रात है और चाँद कैसा प्यारा प्रतीत होता है।

जिस समय लार्ड रैमूर खिड़की पर से पर्दा सरका रहा था तो शहनशीन के नीचे उसको दो व्यक्ति खड़े नज़र आये। एक तो लालिश मालूम होता था और दूसरी

एक स्त्री मालूम होती थी। वे आपस में बातचीत कर रहे थे। स्त्री की आवाज से घबराहट पाई जाती थी और सालिश्व विनोदित और अनुरागभरी बातालाप कर रहा था। रैमूर ने साफ तौर से देखा। उसने पर्दा डाल दिया और फिर मिस्टर टेम्पेस्ट के साथ बातचीत में मग्न हो गया। कुछ मिनिट बाद सालिश्व के पैरों का शब्द सीढ़ियों पर सुनाई दिया। वह द्वार खोलकर अन्दर प्रविष्ट हुआ और यह कहता हुआ चला गया।

सालिश्व — शोक है कि मुझको देर हो गई है। एक मिनिट में उपस्थित होता हूं। परन्तु मेरी प्रतीक्षा मत करना।

लार्ड रैमूर जिसके चेहरे से क्रोध के चिन्ह प्रकट हो रहे थे, ग्रेशिया को देख कर खुश हो गया और वह उसके सुन्दर चेहरे को देखने से दिल ही दिल में प्रशंसा किये बिना न रह सका।

लार्ड — हम को आवश्यकता प्रतीक्षा करने की नहीं है। यह कहकर ग्रेशिया को बांह में बांह डालकर खाने वाले कमरे में तीनों चले गये। यदि इस को निमंत्रण कहा जाये तो यह ग्रेशिया का प्रथम निमन्त्रण था। वह नवयुवती होने के कारण कुछ घबराई हुई थी। परन्तु लार्ड रैमूर में ऐसा कौशल था कि वह घबराये हुए को सर्वथा बेतकल्लुफ़ बना लेता था। वह इस तरह से सरलता से मिस और मिस्टर टेम्पेस्ट से बातें करता था, मानों उस की उनसे वर्षों की जान पहचान हो। यद्यपि वहां अनेकों भृत्य सेवा के लिये उपस्थित थे किन्तु वह ग्रेशिया के लिये उसकी स्वयं खातिरदारी करता था। यह बात ग्रेशिया से भी छिपी न रह सकी और रैमूर के ये भाव उसे बहुत पसंद आये। इसी बीच में स्टीफन सालिश्व भी अन्दर आ गया था। साधारण परिचय के बाद वह एक कुर्सी पर बैठ गया। शिकारी कपड़ों की अपेक्षा वह सायंकाल के भेष में भला मालूम होता था। प्रायः स्त्रियें उसे सुन्दर समझतीं परन्तु ग्रेशिया को वह कल से ही कुछ खटकने सा लगा था और वह उससे घृणा सी करती थी। वह पूरी स्वतंत्रता से बातचीत करता था और ग्रेशिया को अपनी ओर आकर्षित करना चाहता था। उसने दो तीन बार ग्रेशिया के चेहरे को प्रेम की दृष्टि से भी देखा और बोला —

सालिश्व — मिस साहिबा! मैं समझता हूं कि इस ऋतु में आप घोड़े पर सवार होकर शिकार खूब करेंगी।

ग्रेशिया — मैं सवारी को पसंद नहीं करती।

मि० टैम्पेस्ट — (त्यौरी पर बल डालकर) मेरी कन्या घोड़े पर सवार होकर शिकार नहीं करती और न ही मैं शिकारियों से मेल करता हूं।

~~सालि~~ सालिज़्श्रा ने वृद्ध की ओर आश्चर्य से देखा। और लार्ड रैमूर ने भी अति चतुरता से इस विषय को दूसरे रंग में इस सुन्दरता से बदला कि स्टीफन को सिवाय मौनावलंबन के और कोई उपाय न रहा। ~~ग्रेशिया इसकी~~ रैमूर इस शिष्टता से ग्रेशिया से फ्रांस संबंधि हालात पूछता रहा जिसको वह भी चाव से बतलाती रही। ग्रेशिया लार्ड रैमूर से बातचीत में ऐसी मग्न हुई कि वह सालिज़्श्रा की उपस्थिति को सर्वथा भूल गई। उसने लार्ड रैमूर के आग्रह से खाना भी खूब तृप्त होकर खाया। इसी बीच में भृत्य ने मेज़ पर मद्य लाकर रखी परन्तु ग्रेशिया ने इन्कार कर दिया।

लार्ड रैमूर — अब तक मुझ को यह ध्यान ही न रहा था कि आपकी वार्तालाप के लिये कोई मनोरंजन भी है या नहीं। परन्तु मिस टैम्पेस्ट आप कुछ मिनिट के लिये मुझको क्षमा करेंगी। आइये मैं आपको ड्राइंगरूम में छोड़ आऊं।

यह कहकर लार्ड रैमूर ने मिस टैम्पेस्ट को हाथ का सहारा देकर उठाया और ड्राइंगरूम का दरवाजा खोलकर पियानो के पास बिठा दिया। पियानो पर से तरना उठा कर स्वयं वापिस खाने के कमरे में चला आया। स्टीफन सालिज़्श्रा ने सिगरट सुलगाया था और खूब जोर रस से मि० टैम्पेस्ट से बातें कर रहा था। मि. टैम्पेस्ट भी लापरवाही से सुन रहा था। लार्ड रैमूर की इस थोड़ी सी अनुपस्थिति में दो गिलास मद्य के पी चुका था। लार्ड रैमूर ने उस की ओर देखकर खयाल किया कि सालिज़्श्रा आज दिन में भी मद्यपान करता रहा है। मि० टैम्पेस्ट ने सिगरेट नहीं पिया। कुछ मिनिट के बाद लार्ड रैमूर ने मि० टैम्पेस्ट से कहा कि चलो अब मिस साहिबा के पास चलें। बस, वे दोनों उठकर गोल कमरे को चलने लगे परन्तु मि० सालिज़्श्रा पूर्ववत ही बैठा रहा और कहने लगा कि रैल्फ! मुझको क्षमा करना। मैं अपना सिगरेट समाप्त करके उपस्थित होता हूं।

लार्ड रैमूर — (मि० टैम्पेस्ट से ~~माफी~~ के ढंग से) मेरा फूफीजात भाई आज सारा दिन सवारी करता रहा है और थक गया है। (कमरे में प्रविष्ट होकर, ग्रेशिया से, उस के पास बैठकर) अब तक आपने कुछ नहीं बजाया। कृपा करके हम सब को गा बजाकर सुनाओ।

ग्रेशिया — मैं घबरा जाती हूं। मैं केवल अपनी फूफी को गाना सुनाया करती थी।

और जब से घर आई हूं पिताजी को ही गाकर सुनाया है। परन्तु आप गायें बजावें। क्यों क्या आप नहीं गायें बजावेंगे?

रैमूर — (पियानो की ओर बढ़कर) यदि आपकी अभिलाषा है तो मैं अवश्य आज्ञा पालन करूंगा।

यह कहकर वह बाजा बजा कर साथ २ गाने लगा। वह राग विद्या में पूर्ण प्रवीण था और उसकी स्वर अलत्त मीठी थी। ग्रेशिया उसको सुन २ कर मन में आश्चर्य करती जाती थी कि एक व्यक्ति जो मृत्यु के इतना समीप हो, क्योंकर ऐसा गा बजा सकता है और जरा नहीं थकता। राग के समाप्त होते ही ग्रेशिया ने कहा —

ग्रेशिया — क्या अच्छा गाना है। कृपा करके कुछ और गाओ।

रैमूर — (मुस्करा कर) जी खूब? अब तो आपकी बारी है।

यह कहकर उसने एक राग निश्चित किया जिसको ग्रेशिया ने कुछ घबरा कर गाया और राग की समाप्ति पर वह कहने लगा। —

रैमूर — आप क्यों घबराती हैं। आपकी आवाज़ बड़ी मीठी और सुरीली है और मेरे बड़े सौभाग्य थे कि मैंने सुना। (एकाएक) आओ, अब हम इकट्ठे मिलकर गावें। देखो इन्कार मत करना। आप को मालूम है कि मिलकर गाने में कितनी खुशी होती है। शोक है कि आपकी मीठी आवाज के साथ जो इस कमरे में गूंजती है मेरी आवाज कैसी बुरी मालूम होगी। यह कह कर वह मौन हो गया और फिर दोनों गाने लगे।

ग्रेशिया की घबराहट अब दूर हो चुकी थी। फिर दोनों ने एक और राग छेड़ा। रैमूर यथाशक्ति अपनी स्वर को एक प्रवीण रागी की तरह ग्रेशिया की स्वर में मिलाता रहा और खुश होता रहा। उसको मि० टैमी-स्टया सालिटश का ध्यान ही न था कि वे यहां मौजूद हैं। परन्तु एकाएक सालिटश को कमरे में आता देखकर उसकी सारी प्रसन्नता काफूर हो गई। सालिटश का चेहरा तमतमा रहा था। उसके पैर लड़खड़ा रहे थे। वह ग्रेशिया से वार्तालाप करने के अभिप्राय से पियानो की ओर आया। इस पर रैमूर उठ खड़ा हुआ और ग्रेशिया और सालिटश के बीच में खड़ा होकर कहने लगा —

रैमूर — स्टीफन, पुस्तकालय में कुछ नये समाचार पत्र आये हैं (संकोच से) क्या तुम उनको देखना पसंद करोगे?

सालिटश ने (रैमूर के चेहरे पर कठोरता के चिन्ह देखकर) बहुत अच्छा कहा और वहां से चला गया। रैमूर ने इस सुन्दरता से यह प्रबंध किया था कि

ग्रेशिया सालिंश की यह हालत न देख सकी। परन्तु यह मामला टैम्पेस्ट से न छिप सका और वह उठा और कुछ रूखेपन से कहने लगा—

टैम्पेस्ट—लार्ड रैमूर! अब हमारे जाने का समय आगया है।

रैमूर ने भी ठहराना उचित न समझा, क्योंकि उसको खयाल था कि ऐसा न हो कि सालिंश फिर आ जावे। शराबी का भरोसा क्या। उसने नौकरानी को बुलवाया और दरवाज़ा खुलवाया।

मि० टैम्पेस्ट—हम आपके निमंत्रण के बहुत कृतज्ञ हैं।

रैमूर—धन्यवाद तो मेरी ओर से होना चाहिये। क्या मैं आशा कर सकता हूं कि आप मेरी इस दुःखी अवस्था पर फिर भी कभी कृपा करेंगे।

टैम्पेस्ट—(पीला पड़कर) मुझको भय है कि शायद आगे को हम न आसकें। हम ग्राल्टी को बहुत शीघ्र छोड़ने वाले हैं। (नीची गर्दन करके) हम को शायद बहुत काल तक बाहर रहना पड़ जावे।

यहां से सब उठकर बड़े कमरे में आये और वहां से लार्ड रैमूर ग्रेशिया को हाथ का सहारा दिये हुए नीचे ले आया और गाड़ी में बिठा दिया और गर्मचादर को ग्रेशिया के चारों ओर लपेट कर कहने लगा—

रैमूर—गर्मचादर अच्छी प्रकार से पहने रहना। ग्रीष्म ऋतु की रातें प्रायः बीमार कर देती हैं।

बस, गाड़ी चल पड़ी और ग्रेशिया मुड़ २ कर लार्ड रैमूर को जो पूर्ववत् दरवाजे पर खड़ा हुआ था देखती रही। उस का आकार प्रकार ग्रेशिया को बड़े भले मालूम होते थे। गाड़ी के जाने के बाद रैमूर तम्बाखू पीनेवाले कमरे में गया तो देखा कि सालिंश एक कुर्सी पर सो गया है और लंबे और भारी सांस ले रहा है। और ह्विस्की सोडे का एक खाली गिलास मेज पर पड़ा हुआ है। रैमूर खड़ा २ घृणा पूर्वक इस सोती हुई तस्वीर को देखता रहा। अकस्मात् सालिंश ने करवट बदली और आंखें खोलकर कहने लगा—

सालिंश—ओहो, तुम हो। मुझको तुमने गोलकमरे से कुत्ते की तरह जो निकाला उस का मतलब क्या था।

रैमूर—तुम मद्य पिये हुए थे और हालत इस योग्य न थी कि तुम किसी भद्रजन के मुलाकाती कमरे में जाओ।

सालिंश—मद्य—मद्य-पीने-को-ला-न-त-भेजो। (हिचकी लेकर) मैं-मैं-बिल्कुल नशे में नहीं हूं।

रैमूर—अच्छा चलो इस बात को जाने दो, तुम यह बताओ कि ...
... दुकान में ...

खानेसे पहिले तुम बाग़ में किससे बातें कर रहे थे। मैंने तुमको अच्छी तरह से पहचाना था, वह कौन थी?

स्टीफ़न — (लड़खड़ाती हुई आवाज से) अगर-अगर तुमको जरूरी तौर पर यह-२ (हिचकी लेकर) भेद जानना है, तो-लो-सुन-२-लो-वह एक नवयुवती से — सेविका थी।

तैमूर — (कुछ कठोर आवाज़ में) तुम्हारा यह अभिप्राय है कि मेरे घर की सेविका थी।

साल्टश — (कुछ संभलकर नशे में) और कौन हो सकती थी। भई, आज तुम ज़रा-ज़रासी बात के लिये क्यों झगड़ते हो। (फिर हिचकी लेकर) मेरा ख़याल है कि-कि-आहा, हा हा-कि हाय-२ नौकरानी से बात-चीत यद्यपि करना (करना) या एक (हाय-२) चुम्बन ले लेना मनुष्य को कोई (हे-२) अपराधी (अपराधी) नहीं बनाता। मैं (हिचकी लेकर) हाय ख़याल करता हूं कि तुम हमेशा से ( ) धर्मीला नहीं रहे हो।

तैमूर — नहीं मैंने कभी ऐसा नहीं किया। स्टीफ़न! तुम एक अतिथि हो, और चाहे तुम कैसे ही बदमाश क्यों न हो, मैं तुमको कुछ कह नहीं सकता।

साल्टश — (लड़खड़ाते हुए उठकर) तुम मेरी बेअदबी करते हो

तैमूर — चुप (घंटी बजाकर नौकर को बुलाते हुए) तुम बेअदबी से परे हो।

साल्टश — (हिचकी लेकर) तुम मुझको अपने मकान से निकालना चाहते हो।

तैमूर — हाँ, तुमको कल इस जगह को छोड़ देना होगा और मैं आशा करता हूं कि भविष्यत् में तुम कभी इस जगह नहीं आओगे। तुमको रुपयों की आवश्यकता हो तो लिख भेजो। परंतु मैं तुमसे कभी नहीं मिलूंगा। (नौकर को आता देखकर संबोधन करते हुए) बेरजस से कह दो कि मि. साल्टश का सब असबाब बांध रक्खे, वह कल प्रातः नौ बजे की गाड़ी से जावेंगे। (नौकर के जाने पर संबोधन करके) क्या तुम बिना सहायता के अपने कमरे में जा सकते हो। नहीं तो मैं बेरजस को बुलवाऊं और वह तुमको तुम्हारे कमरे में छोड़ आवे।

साल्टश — नशे में — डैम यू — हाँ — अच्छा इस समय मैं तुम्हारे वश में हूं, तुम मेरे साथ कुत्ते की तरह सलूक कर सकते हो क्यों कि मैं तुम्हारी ( ) — डेवढी — पर पड़ा हुआ हूँ मुझको (हिचकी लेकर) सङ

ना ही पड़ेगा। किसी दिन संभव है कि मैं तुम्हारे बराबर हो जाऊंगा। (एकदम किसी ख्याल से चौंककर होश में) देखो रेमूर हमको लड़ना नहीं चाहिये, हम फिर आपस में भाई हैं।

यह कहकर साल्टश ने हाथ बढ़ाया, परंतु रेमूर ने हाथ मिलाने से निषेध किया और दरवाज़ा खोलकर कहा

रेमूर:— साल्टश, सलाम है, और अलविदा, मैं कल प्रातः आपको यहाँ न देखूं।

यह कहकर लार्ड रेमूर कमरे में खड़ा रहा, और साल्टश को जाते हुए देखता रहा, और उसके जाने के बाद पुस्तकालय में आया। और आप ही आप कहने लगा।

शराबी, बदमाश— यह अवश्य रुपये को बरबाद करेगा। किस रुपये को। जिसके प्राप्त करने में मेरे पिता ने अपना खून, पसीना एक कर दिया था। हे ईश्वर! रक्षा कर, (किसी विचार से एकाएक संतुष्ट होकर और विचार में मूर्तिमति ~~होकर~~ ग्रेशिया को देखकर चिल्ला उठा) जो ईश्वरेच्छा, मैं वही करूंगा, हाँ अवश्य ऐसा ही करूंगा।

---

७ वां परिच्छेद

ग्रेशिया अपने पिता के साथ ग्रीनिच से ~~लेकर~~ रवाना होकर सर्वथा मौन बैठी रही और गाड़ी के एक कोने में दुबकी रही, और लबादे को जो लार्ड रेमूर ने पहनाया था हाथ से पकड़े रक्खा। दुनिया में उसको इससे पहिले कभी इतनी खुशी प्राप्त न हुई थी। और उसको कभी यह विचार उत्पन्न नहीं हुआ था कि जीवन में ऐसे आनंद हैं। जो कुछ उसने ग्रीनिच में देखा था और जो बातचीत लार्ड रेमूर ने उसके साथ की थी वह दिल में दोहराती रही। कभी दिन में ख्याल करती थी कि लबादा पहनाते समय लार्ड रेमूर की आवाज़ कैसी मधुर मालूम होती थी और विदायगी के समय उसने किस प्रेम से मेरी ओर देखा था। वह कैसा जीवित हृदय था। जिस समय वह अपने घर में पहुंचकर अपने कमरे में प्रविष्ट हुई उसका दिल खुशी से बल्लियों उछल रहा था। मि. टैम्पेस्ट ने भी ग्रेशिया की इस आंतरिक प्रसन्नता को अनुभव किया और ध्यान से उसकी ओर देखा। उसको ख्याल हुआ कि

अभी सारे क़िस्से को कत्ल करके उसकी प्रसन्नता को दुःख में न बदलना चाहिये। परन्तु घटना को सच करना मि. टैम्पेस्ट के लिये आवश्यक था, वह सारी ही मत बांधता रहा कि मैं ग्रेशिया को सब हाल सच-२ कह दूं। जब वह बीमारी के चेहरे की ओर देखता तो मौन हो जाता, और ख्याल करता कि आज रात को सारी घटना कथन करना समयोचित नहीं है। मैं ऐसा नहीं करूंगा। पर अंत में रहा न गया और कहने लगा।

टैम्पेस्ट:— ग्रेशिया, तुम आज बहुत ही खुश नजर आती हो मालूम होता है कि आज सायंकाल से तुम खुश रही हो।

ग्रेशिया:— निस्संदेह, पिताजी, ठीक है।

घर पहुंचने पर मि. टैम्पेस्ट ने ग्रेशिया के मस्तक पर चुम्बन दिया, और ग्रेशिया वह गीत जो उसने और लार्ड रैमूर ने मिलकर गाया था धीरे-२ गाती हुई अपने कमरे में प्रविष्ट हुई। सारी रात उसको रैमूर और उसके गीत स्वप्न में आते रहे और जब प्रातः काल जागी तो उसका पहला विचार जो उत्पन्न हुआ वह यह था कि ओहो लार्ड रैमूर ने हमको अपने महल ग्रीनिच में चित्र देखने को बुलाया है। देखिये पिताजी स्वयं चलते हैं या मुझको भी जाने देते हैं। अपने विचारों में वह गोल कमरे में और आई। और सबसे पहली चीज जिसने उसके ध्यान को गोल कमरे में अपनी ओर आकृष्ट किया, वह एक रंग-बिरंगे फूलों का गुलदस्ता था जो कि सागवान की एक मेज पर एक गुलदान में रक्खा हुआ था। यह देखकर उसने गुलदस्ते को हाथ में उठा लिया और टोपी पहनकर होज माली को ढूंढने के लिये वाटिका की ओर चली गई। तो क्या देखती है कि बूढ़ा माली अपने काम में मग्न है, उसने ग्रेशिया को आते देखकर टोपी उतार कर सलाम किया।

ग्रेशिया:— होज, मैं इस गुलदस्ते के लिये तुम्हें धन्यवाद देती हूं तुम्हारी बड़ी कृपा हुई कि तुमने मेरा इतना ध्यान रक्खा।

होज:— (नीची गर्दन करके) मिस साहिबा! मैंने यह फूल नहीं और नहीं ऐसे फूल हमारे बाग में पैदा होते हैं। फूलों को हाथ में लेकर और ध्यानपूर्वक देखकर

नहीं मिस साहिबा! यह हमारे यहां के नहीं हैं। यह धरती के नीचे उत्पन्न होते हैं और उनकी कीमत कई पौण्ड है।

ग्रेशिया:— तुमने नहीं भेजे तो फिर किसने भेजे।

एक नौकरानी:— (जो मकानों में से बाहर आ गई थी, समीप जाकर नम्रता से) यह गुलदस्ता महल ग्रीनिच से आया है। लार्ड रैमूर साहब स्वयं लेकर आये थे और मुझसे कहने लगे कि जाओ बालाखाने पर ले जाओ। कह देना यह मिस टैम्पेस्ट के वास्ते हैं और कोई आदेश संदेश नहीं दिया।

ग्रेशिया:— (दिल में खुश होकर) लार्ड रैमूर की यह बड़ी मेहरबानी है।

इसके बाद ग्रेशिया ध्यान से फूलों को प्रेमभरी दृष्टि से देखने लगी। वह गोल कमरे के स्थान से धीरे-२ अपने विशिष्ट कमरे में गई और फूलों को एक गुलदान में सजाकर अपनी सिंगार मेज पर रख दिया। फिर एकाएक सोचने लगी कि उनको अपने पास रखना व्यर्थ है और इस विचार के आते ही उसने खाने की मेज पर सजा दिया। जोसप चाय को एक बड़ी (⟶) = ट्रे में लगा रहा था, मिस ग्रेशिया को देखकर कहने लगा।

जोसप:— मिस साहिबा! मेरे स्वामी ने हुक्म दिया है कि चाय उनके सोने के कमरे में ही ले जाऊं। मालूम होता है कि रात को वह बेचैन रहे हैं और अभी देर तक नीचे नहीं आवेंगे। यह कहकर जोसप चला गया और खाने से निपट कर ग्रेशिया मिसिज़ हिस्टर से थोड़ी बातचीत करती रही और फिर कहने लगी कि आज मैं स्वयं बाज़ार जाकर कुछ आवश्यक वस्तुएँ खरीदूंगी और जब मिसिज़ हिस्टर ने आश्चर्य से ग्रेशिया के चेहरे की तरफ देखा और निषेध किया कि तो एक आवश्यक वस्तुओं की सूची बनाकर जल्द ही बाज़ार को चली गई।

यह गांव एक छोटा सा था लेकिन ग्रेशिया के दिल को बहुत अच्छा मालूम हुआ।

गांव के दुकानदार और बच्चे आश्चर्य से उसे देखने लगे और बड़े सम्मानपूर्वक उससे पेश आये जब कि वह कस्साब की दुकान में दाखिल हो रही थी।

कस्साब [illegible]

क्योंकि सर्वदा वस्तुएं नौकर लेजाया करते थे परंतु ग्रेशिया उसके
आश्चर्य पर मुस्कराई। क्योंकि फ्रांस में वह सर्वदा अपनी जीवनोपयोगी
सभी वस्तुएं आपही खरीद किया करती थी।

गांव में से गुजरते समय वह कभी-२ किसी स्त्री या बच्चे से
वार्तालाप करने लगती थी और वापिस हो रही थी कि उसने लार्ड
रैमूर को आते हुए देखा, वह जल्दी-२ चल रहा था और उसका सिर
सामने को था। उसमें रईसियों का चिह्न न थे। उसके साथ दो-तीन
कुत्ते थे और हाथ में हन्टर लिये हुये था और जवानी और शारीरि-
क शक्ति का मूर्तिमान चित्र सा दिखाई पड़ता था। ग्रेशिया को देखकर
ठिठका और फिर यों बोला

रैमूर:— मैं आज बड़ा ही सौभाग्यशाली हूं। मैं फिर कल से गांव
में नहीं आया और आज पहिला ही अवसर है कि आपसे मुलाकात
हो गई।

ग्रेशिया:— नहीं बल्कि यों कहो कि मैं आपसे मिलकर बड़ी प्रसन्न
हुई हूं मैं आपका धन्यवाद अदा करती हूं कि आपने फूल भेजे। यह फूल
सुन्दर हैं कि वर्णन नहीं हो सकता, और आप की बड़ी कृपा हुई कि
आपने उनको भेजा।

रैमूर:— आपकी मेहरबानी सबसे ज्यादा है कि आपने इनको स्वीकार
किया। क्या आप वापिस जा रही हैं मैं भी आपके साथ चलूंगा। मैं भी प्रान्टरी
जाने वाला था। ~~यद्यपि~~ यद्यपि अभी सवेरा ही है। परंतु एक व्यक्ति ने मुझको
लंडन से एक तसवीर भेजी है और मैं तुम्हारे पिताजी से मिलकर निवेदन
करने वाला था कि वह तुमको भी लेकर ग्रीनब्रोव ले क्योंकि अगर
खरीदनी है — — — न हुई तो मैं कल उसको वापिस लंडन भेज दूंगा।

ग्रेशिया:— मैं बड़ी खुशी से उस तसवीर को देखूंगी। मुझको विश्वा-
स है कि पिताजी भी जरूर हमारे साथ चलेंगे। चलो अभी चलकर पिताजी
से पूछ लें।

यह कहकर दोनों जल्दी-२ चल पड़े, और लार्ड रैमूर उसकी
तेज चाल — रफ्तार पर लट्टू होता रहा, और यद्यपि वह
तेज चल रही थी लार्ड रैमूर भी उसका साथ दिये गया।

लार्ड रैमूर को यह पहला अवसर प्रान्टरी के देखने का था और
फाटक में दाखिल होते ही उसने महल [illegible]
की हालत को देखा [illegible]
और फिर ग्रेशिया से [illegible] उसको [illegible]

कहने लगा। मैंने आज ही पहिले पहिल आपके महल प्राल्टरी को देखा है।

ग्रेशिया :— अच्छा, परंतु एक ऐसे निकटतम पड़ौसी के मुँह से यह बात सुनकर कैसा आश्चर्य आता है। मैं आशा करती हूँ कि आपका यह अंतिम आगमन न होगा।

रैमूर :— (कमरे में प्रवेश करके) यह एक पुरानी परंतु अत्यंत सुन्दर इमारत है। और आप एक वस्तु के अधिकारी हैं जिसको कोई दौलत नहीं खरीद सकती, अर्थात एक ऐतिहासिक और प्राचीन वंशपरंपरा की इमारत।

ग्रेशिया : (माँफी माँगते हुए (नम्रता से) यह एक बड़ी पुरानी इमारत है, और रही हालत में है। (फिर जोसप से) क्या पिताजी अंदर हैं?

जोसप ने दरवाजा खोल दिया, और ग्रेशिया अंदर-2 प्रविष्ट हुई। ग्रेशिया के प्रविष्ट होते ही लार्ड रैमूर ने उसी के मुँह से एक चीख सुनी ↓ की आवाज जिसको सुनकर वह थोड़ा बाहिर निकल आया।

मि: रैमोस्टर एक कुर्सी पर बैठा हुआ था। अपने हाथों से अपना सिर पकड़ा हुआ था, और सिर को मेज पर झुकाया हुआ था और कैसा शोकातुर हो रहा था जिसको देखकर ग्रेशिया धैर्य न धर सकी।

ग्रेशिया :— (पिता के कंधों पर हाथ रखकर) ~~[illegible]~~ पिताजी! बतलाओ तो सही क्या मामला है, लार्ड रैमूर साहब कमरे में आपकी प्रतीक्षा में हैं।

रैमोस्टर : सिर उठाकर—क्या लार्ड रैमूर साहब आये हैं।

ग्रेशिया :— जी हाँ, क्या मैं उनसे कह दूं कि आपका शरीर स्वस्थ नहीं है और आप मिल न सकोगे।

रैमोस्टर : नहीं; कदापि नहीं; कृपा कर लार्ड रैमूर को अंदर बुलाओ।

लार्ड रैमूर ने बाप बेटी की बातचीत सुननी पसंद नहीं की थी और वह कमरे के बाहर चला आया था। ग्रेशिया शीघ्र-2 कदम उठाती उसके पास पहुँची और कहने लगी।

ग्रेशिया :— कृपा करके आप अंदर आ जावें, ईश्वर जाने मेरे पिता को क्या हो गया है।

यह कहकर [illegible] वह [illegible] होने के बाद

ग्रैशिया ने दरवाजा बंद कर दिया। मि. टैम्पैस्ट ने हाथ बढ़ाकर लार्ड रैमूर से हाथ मिलाया, और एक दो मिनट तक सोचता रहा कि किस तरह से बोलना शुरू करे। फिर उस तरह से प्रारंभ किया।

टैम्पैस्ट:- लार्ड रैमूर आपका मिज़ाज कैसा है?

रैमूर:- (बुड्ढे की बेटी को करुणाभरी दृष्टि से देखते हुए) मि. टैम्पैस्ट मैं शोक करता हूँ कि असमय आया हूँ।

टैम्पैस्ट:- (बात काटते हुए) नहीं हरगिज नहीं। तशरीफ रखिये। लार्ड रैमूर आप ठीक समय पर पधारे हैं। इसके पूर्व कि आपको अन्य लोग मेरे हालात सुनायें मैं स्वयं अपनी कहानी सुनाना चाहता हूँ। मैं अपनी कन्या को भी ये हालात सुनाऊंगा। मेरा कर्तव्य तो यह था कि मैं पहले ही सुना देता, परंतु मुझमें साहस न हुआ।

ग्रैशिया:- (पिता के बिल्कुल समीप जाकर) सुख पूर्वक) पिताजी ~~अब्बाजान~~ क्या मामला है।

टैम्पैस्ट:- लार्ड रैमूर साहब समझ गये हैं। बेटी, मैं बड़े दुःखों में घिरा हुआ हूँ। मैं क्या बताऊं तुम समझ न सकोगी, हम बहुत निर्धन हैं। लार्ड रैमूर साहब! अभिप्राय यह है कि मैं सर्वदा को बरबाद होगया हूँ। बर्षों से सिरपर कर्जे का छप्पर पड़ा हुआ हूँ, मैं मुकाबिला करता रहा हूँ। परंतु अब प्याला इतना भर चुका है कि एक बूंद की गुंजायश नहीं है और सब कष्ट समाप्त हो चुके हैं। (थोड़ी देर ठहर कर और शोक के वेग को रोककर) ग्रौसरी की तकदीर में लिखा है। परंतु शोक इतनी राशि भी न उठ सकेगी, जो मेरे कर्ज देने वालों को पर्याप्त हो सके। अब हम ग्रौसरी को सर्वदा के लिये अंतिम नमस्कार करने वाले हैं। आपके आने से पहले मैं यही सोच रहा था कि कहीं चला जाऊं कहीं न जाऊं।

ग्रैशिया! (आपके हाथों को अपने हाथों में लेकर बहादुरी से मुस्कराकर) पिता ~~अब्बा~~ जी! क्या यही मामला है जिसके कारण आप इतने दुःखी हो रहे हैं कि हम गरीब [illegible] और ग्रौसरी को छोड़ रहे हैं। पिताजी! ईश्वर [illegible]

रुक रुक कर बोली।

टैम्पेस्ट:- (चौंककर) बेटी तू क्या जाने (फिर लार्ड रैमूर से) लार्ड रैमूर क्षमा करना, अपने दुःख में इस थोड़ी सी मुलाकात पर मेरा कर्तव्य था कि मैं आपको शामिल न करूं।

रैमूर:- मैं इस सच्चे दिल का बहुत मशकूर हूं मगर मैं सिर्फ (केवल) यह जानना चाहता हूं कि क्या अब कुछ नहीं ~~किया~~ हो सकता।

टैम्पेस्ट:- (बड़े जोर से) नहीं कुछ नहीं, मैं चिरकाल से सोच रहा हूं कि कोई उपाय तो ऐसा हो जो मुझको उस चिंता से छुटकारा दिलावे। परंतु शोक है कि कोई उपाय ऐसा नहीं है।

रैमूर:- आपको विश्वास है कि कोई उपाय सफल ~~[illegible]~~ नहीं हो सकता।

टैम्पेस्ट:- कोई नहीं, मेरा कानूनी सलाहकार भी सोच चुका उसको भी कोई उपाय नहीं आया। लार्ड रैमूर! मैं सर्वथा बरबाद हो चुका हूं।

रैमूर:- (ग्रेशिया को संबोधन करके धीरे से) मिस साहिबा! क्या आप कृपा करके मुझको अपने पिता से थोड़ी देर एकांत में वार्तालाप करने देंगी?

ग्रेशिया ने इस बात पर अपने पिता की ओर देखा जिसने कि नीचे गर्दन करली और लार्ड रैमूर ने धीरे से द्वार ~~[illegible]~~ खोला और कहा।

रैमूर: (ग्रेशिया से) आप ज़रा बाग़ में तशरीफ ले जायें, मैं अभी हाज़िर होता हूं। (शोकातुर बूढ़े से) — — — मनुष्य का हताश नहीं होना चाहिये। उसको ~~[illegible]~~ — — उसी से निराश आशामय बन सकते हैं। कृपा करते देर नहीं लगती। (ईश्वर पर विश्वास रखो)

ग्रेशिया पुस्तकालय से निकलकर बाहर आई, दो कुत्तों ने जो मालिक के हुक्म पर बाहर बैठे हुए थे उसकी ओर देखा। वह एक (पुरानी) बेन्च पर झुक पड़ी और नीचे बैठ गई, और सिर को घुटनों में देकर रोने लगी। उसको प्रथम तो कुछ ख्याल न हुआ फिर धीरे-२ उसको समझ आने लगी कि उनका महल अब उनसे छिन जायेगा। वे घर बार रहित हो जायेंगे और ईश्वर जाने क्या-२ विपत्तियें उनको झेलनी पड़ेंगी। वह इन ही विचारों में लीन थी परंतु साथ ही लार्ड रैमूर के वचन ~~से~~ कि निराश नहीं होना चाहिये और कुछ ढ़ाढ़स देते थे। और वह विचारती थी कि लार्ड महोदय का क्या अभिप्राय है। परंतु कोई उत्तर नहीं सूझता था। वे शब्द कुछ आशाजनक ~~[illegible]~~ अवश्य थे। अभी थोड़ी देर उसको बैठे हुए नहीं हुई थी कि ... और आता दिखाई दिया। और क्षमा याचना करता उसका था ... मकान की ओर से

रैमूर:— मैंने आपको देर तक प्रतीक्षा में रक्खा, मैं लज्जित हूँ।

ग्रेशिया:— निस्संदेह, यह थोड़ा सा काल मुझको बहुत मालूम हुआ है मैं अत्यंत
बेचैन रही हूँ, मेरे पिता कैसे हैं मैं उनसे मिलने जाती हूँ।

रैमूर:— हाँ अभी-२ वे आपको बुलायेंगे, आप उनकी चिंता न करें। मैंने उनको थो
ड़ी सी खुशखबरी सुना दी है। उनको मालुम है कि मैं आपसे थोड़ी सी बात चीत करूंगा
और यह भी मालूम है कि क्या बात करूंगा।

ग्रेशिया:— (आशाभरी दृष्टि से) — — — आपने कहा था कि अभी आशा है मैं
जानना चाहती हूँ कि क्या यह सच है।

रैमूर:— तुम स्वयं ही अनुमान लगा लो। तुम्हारे पिता ने अपनी आपत्तियों
बढ़ाकर नहीं सुनाया है। मैं आपसे स्पष्ट ही बात करूंगा। मुझे मेरे कानूनी सलाह
कार ने पहिले ही तुम्हारे पिता की आपत्तियों का वर्णन कर दिया था। मुझको पता
था कि प्रोल्टरी अवश्य बिकेगी और इसके बिकने से तुम्हारे पास कुछ भी नहीं बचेगा

ग्रेशिया:— हाय मेरे दयनीय पिता! मैं क्या करूं।

रैमूर:— हाँ मेरे साथ आपके पिता ने भी यही बातचीत की। उसके वास्ते यह बहुत
भयंकर घटना है। कल्पना तो करो, पुराने संबंधों को ( ) तोड़ना ऐसी प्यारी और पुरानी
जगह को छोड़ना, दूसरे आदमियों का घर पर स्वामित्व हो जाना तुम्हारे लिये कैसा बुरा है।
मैं तुमको केवल यह बतलाना चाहता हूँ कि और तुम ध्यान तो करो कि तुम किन
विपत्तियों में कैसे हुए हो।

ग्रेशिया:— मैं खूब परिचित हूँ, मैं जानती हूँ। मुझको अपना तो कुछ ख्याल नहीं है
परन्तु पिता जी का अवश्य है। हाय उनका क्या हाल होगा। मैं जवान और बलिष्ट हूँ और
रोटी कमा सकती हूँ। लेकिन वे बिलकुल सर्वथा बूढ़े हैं, और कुछ नहीं कर सकते।

रैमूर:— निस्संदेह, यह तुम्हारे लिये वह बहुत बुरा है, और सबसे अधिक उनके
वास्ते जैसा कि तुमने कहा है, ऐसी — बेइज्जती — युवा आदमियों को भी अच्छी
नहीं हो सकती। परन्तु तुम्हारे आप की उम्र के आदमियों को सर्वथा असह्य होती है (कुछ
ठहरकर कि ग्रेशिया अच्छी तरह से विपत्ति का अंदाजा करके और फिर — (अत्यन्त ही
प्रेमभरे ढंग में) अब यह आप पर आश्रित है कि आप अपने पिता को निराश तथा निस्स
हाय दुनिया में खराब होने दें, या उसको अपने महल में बादशाही करने दें।

ग्रेशिया:— (आश्चर्य से) क्या मुझपर निर्भर है।

रैमूर:— (ग्रेशिया के कंधों पर हाथ रखकर और आंखों में आंखें डालकर) निस्सं
देह आप पर। मैं चाहता हूँ कि आप जो कुछ मैं कहने वाला हूँ उसको सोचें और तुरंत
उत्तर दें कि आप अपने पिता को बचायेंगी या नहीं।

ग्रेशिया:— आप मुझसे क्या करवाना चाहते हैं। दुनिया में क्या कोई काम है
साहैं कि मैं उसको अपने पिता के लिये न करूंगी। आप मुझको केवल
रास्ता बता दीजिये कि मैं किस प्रकार से —

से अपने पिता की सहायक हो सकती हूं और किस प्रकार रक्षा कर सकती हूं।

रैमूर :- (उसी प्रकार ग्रेशिया की आँखों में आँखें डाले हुए उसको समझने के वास्ते उद्यत करता हुए) मेरे साथ शादी करने से आप बचा सकती हैं॥

अष्टम परिच्छेद

ग्रेशिया मिनट दो मिनट तो लार्ड रैमूर की बात को न समझ सकी लेकिन जब उसने ध्यान दिया तो सारी बात समझ में आ गई। उसके चेहरे पर एक रंग आता था एक जाता था, उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी और मूर्छा की सी अवस्था पहुँच गई।

लार्ड रैमूर :- डरो मत, मैं इसी लिये असल बात कहने में देर कर रहा था कि तुम सुनने के लिये उद्यत हो जाओ। मैं फिर तुम से कहता हूँ कि तुम मेरे साथ शादी करके अपने पिता को इस विपत्ति से छुड़ा सकती हो, और भविष्यत की आने वाली विपत्तियों से बचा सकती हो॥

लार्ड रैमूर यह बात चीत नम्र भाव से कर रहा था (मानों प्रार्थना कर रहा था) ग्रेशिया ने आहिस्ता से अपना हाथ लार्ड महोदय के हाथ से अलग कर लिया और दोनों हाथ मलने लगी। इसकी बात समझकर ग्रेशिया के दिल में नाना प्रकार के भाव आ रहे थे आश्चर्य और विस्मय उसके चित्त से धीरे २ दूर होने लगे और उनकी जगह पर दिल में कुछ और ही उमंगें पैदा होने लगीं, जिसको वह स्वयं न जान सकी। कभी तो उसको भय प्रतीत होने लगता था, और कभी जोश उसके हृदय में तरंगें मारता था, आखिर रहा न गया और कहने लगी:

ग्रेशिया :- मैं क्यों भय खाती मैं क्यों ऐसा करती। लेकिन मैं सवाल यह करती हूं कि मैं आप से किस कारण से शादी करूं?

रैमूर :- निस्सन्देह! आपको यह बात आश्चर्यजनक अवश्य प्रतीत होगी परंतु मैं तुम पर सब कुछ प्रगट कर दूंगा। जैसा कि तुमने पहिले मुलाकात में कहा था कि मैं अमीर आदमी हूं। अब तक मैं अमीर हूं, और लोग मुझको कारूं से उपमा देते हैं। परन्तु यह दौलत मेरे पास खास शर्तों से जकड़ी हुई है। और यदि मैं अपने पिता की वसीयत पर आचरण करूं तो इस दौलत को मुझको छूने तक का अधिकार नहीं है। यदि मुझको अधिकार होता तो और तुम्हारे पिता का रुचि होता तो मैं तुम्हारे पिता की गिरवी रखी हुई सारी जायदाद को खरीद कर उसको ऋण से मुक्त करा सकता था।

ग्रेशिया :- परन्तु मुझको निश्चय है कि मेरे पिता का स्वाभिमानी दिल इसे स्वीकार न करता।

रैमूर :- निःसंदेह मैं जानता हूं, लेकिन यदि वह स्वीकार भी कर ले। तो मैं बिना शादी के ऐसा करने का अधिकारी नहीं हूं। क्योंकि बिना शादी के मेरी सारी जायदाद चल तथा अचल मेरी मृत्यु पर मि. साल्टरश को जो उन दिनों में हमारे साथ था और संबंधी है ... अगर मैं शादी करलूं तो मैं अपनी सारी जायदाद

अपनी स्त्री को देने का अधिकारी हूँ। या यूं कहो कि मैं अपनी जायदाद के मालिक का उत्तरदाता हो जाता हूँ। आप समझीं कि नहीं?

ग्रेशिया :— मैं कुछ कुछ समझी, लेकिन क्यों?

रेमूर :— (बात काट कर) आपका यह अभिप्राय है कि मेरे पिता ने ऐसा क्यों किया। (कुछ देर ठहर कर) (दिल में) मैं उसको बताऊं कि मेरे पिता ने किस प्रकार पद प्राप्त किया था जिसको वह वंश में स्थिर रखना चाहते थे। (फिर ग्रेशिया से) मेरे पिता का यह ख्याल था कि मैं शादी नहीं करूंगा शायद उनको मेरी बीमारी का पूर्व से ही पता लग गया हो।

ग्रेशिया :— तो आपका विचार शादी करने का न था।

रेमूर :— सर्वथा नहीं।

ग्रे० :— और अब आप केवल मेरे पिता को बचाने के अभिप्राय से शादी करना चाहते हैं।

रेमूर :— हाँ, लेकिन एक और भी कारण है, वह यह है कि यही मि. साल्टश जिसको मेरी जायदाद पहुँचती है, इस जायदाद के योग्य नहीं है। कौड़ियों के मोल रुपया लुटा देगा। मेरे पिता को उनके आचार व्यवहार का यदि पूरा पता होता, तो वह कदापि ऐसी वसीयत न करते।

ग्रे० :— तो इसके दो अभिप्राय हैं, प्रथम यह है कि आप मुझको और मेरे पिता को विपत्तियों से छुड़ाना चाहते हैं दूसरे यह है कि आप अपने रुपये को एक दुराचारी से बचाना चाहते हैं।

रेमूर :— जिस तरह भी समझो। अपना निर्णय हाँ या नहीं में देने से एक दो मिनट ठहरो। मैं आपको यह भली प्रकार समझाना चाहता हूं कि मेरे शादी करने का क्या अर्थ है। मैं केवल यह चाहता हूं कि आपसे शादी रसम के अनुसार हो जावे, और अपना नाम बदलकर आप मेरा नाम ग्रहण कर सकें।

कुछ क्षण तक दोनों मौन रहे, लार्ड रैमूर यह समझाना चाहता था कि ग्रेशिया केवल नाम मात्र की ही पत्नी कहलायेगी, परन्तु उसको ऐसे शब्द न मिल सके, जिनसे कि वह अपने अभिप्राय को पूरे तौर पर प्रगट कर सके। और स्पष्ट कहने से वह ग्रेशिया के भोले दिल को ठेस लगाना न चाहता था। अंत में वह रुक न सका और बोला —

रैमूर :— केवल आप (<s>   </s>) — रिश्ते में मेरी पत्नी बन जावेंगी। आपको अधिक कहना या आपसे अधिक कुछ आशा रखना आपका अपमान है क्योंकि आपको मालूम है कि मैं जीवित नहीं रहूँगा।

यह कहकर लार्ड रैमूर ने ग्रेशिया की तरफ देखा, और विचार करके कहा कि क्या यह मेरी बातों को समझती है। परन्तु बेचारी के दिल की दशा उसे मालूम क्या हो सकती थी कि [illegible] रखने से मुझसे स्नेह नहीं है। स्नेह के कारण वह मुझसे शादी नहीं करना चाहता। प्रत्युत मुझको

और मेरे पिता को दरिद्रता से और अपनी दौलत को एक बदमाश से बचाने के उद्देश्य से शादी करना चाहता हूँ। लार्ड रैमूर को यह मालूम ही न था कि यही ख्यालात तो ग्रेशिया को अति आश्चर्यान्वित कर रहे थे और वह अपने विचारों में [illegible] थी कि प्रायः वार्तालाप को उसने सुना ही नहीं, अंत में अपना निर्णय दे ही दिया।

ग्रेशिया:- मैं आपसे शादी नहीं कर सकती।

रैमूर:- (स्नेह से) हाँ, यह तो मुझको मालूम था कि तुम प्रथम-२ निषेध अवश्य करोगी। तुम्हारे पिता ने भी प्रतिषेध कर दिया था, प्रत्युत, वे तो ऐसे कुपित हो गये थे कि तुम नहीं हुई। निस्संदेह, पहिले तो उनको भी मालूम हुआ कि यह एक क्रय और विक्रय का सौदा है।

ग्रे.- (जोश और क्रोध से लाल होकर) क्या मुझको बेचना अभिप्रेत था। (स्वयं नीची गर्दन करके) अच्छा, तो क्या पिताजी) संतुष्ट हैं।

रैमूर:- वे अनुकूल हैं, परंतु पहले तो वे बहुत ही क्रोध में आ गये थे और मेरी बात अधूरी ही थी कि उन्होंने मुझसे कहा कि मैं इसे सुनना नहीं चाहता, लेकिन मैंने उनको नरमी से जब सब कुछ बता दिया कि यह नाममात्र की शादी उनको और आपके लिये कितनी लाभदायक सिद्ध होगी तो वे अनुकूल हुए। हे भगवान उन पर दया करो।

ग्रेशिया:- दया।

रैमूर:- जी हाँ, सारी वार्तालाप में उनको अपना सर्वथा ध्यान न था। जैसे तुम अपने पिता का ध्यान करती हो, वैसे ही वे तुम्हारा ध्यान करते हैं। कहते थे कि मैं संसार में कठोर से कठोर जीवन व्यतीत कर सकता हूँ, परंतु तुम्हारी जंजीर उन के पैरों में पड़ी हुई है, और यही ख्याल तुम्हारा है। अगर वह न होते तो तुम इन सख्तियों को हँस, खेलकर सहा करलेती। निस्संदेह मैं बड़े बल के साथ कहूँगा कि उनके ख्यालात तुमको भविष्यत् में आने वाली अन्य विपत्तियों और दरिद्रता से बचा सकते हैं। परंतु मैं तुम्हारे वार्तालाप से यह परिणाम निकालता हूँ कि तुम उन का ख्याल कर रही हो। और इस बारे में अत्यंत विशुद्ध हृदय से विचार करूँगा। (थोड़ी देर ठहर के और ग्रेशिया के चेहरे पर नजर करके कि उसकी निगाह नीची है, भौंहें तनी हुई हैं, और गंभीर विचारों में निमग्न है) मैं तुमको सोचने के लिये अधिक समय दे सकता था परंतु वर्तमान अवस्था में ऐसा नहीं कर सकता। मुझको सारे मामले में सलाह भी प्रयोजनीय है। यदि संभव हो, तो अपना अभिप्राय मुझ पर अभी प्रगट न करें।

ग्रेशिया:- (आश्चर्य से) क्या, अभी!

रैमूर:- जी हाँ, जो-२ संदेह आपके दिल में उठे और जो प्रश्न आप करें मैं उत्तर देने को और इस मामले को साफ करने को तैयार हूँ।

ग्रेशिया:- फरमाइये।

रैमूर:- क्या तुम सर्वथा समझ गई हो, यदि नहीं तो लो सुनलो, कि मेरे साथ शादी करने से

तुम अपने महल ग्राल्टरी को बचा लोगी। और मेरी दौलत की अधिकारिणी हो जाओगी। और मैं प्रण करता हूँ कि तुम्हारे किसी भविष्यत् के कार्य पर मैं आक्षेप न करूँगा।

ग्रेशिया:— अपने हाथ से माथे का पसीना पोंछने लगी और रैमूर उसके पास से तनिक हटकर शनैः २ टहलने लगा। प्रत्यक्ष में कोई घबराहट उसके चेहरे से न पायी जाती थी, परन्तु दिल में वह काँप रहा था और जानता था कि इस जोश का परिणाम मेरे लिये अच्छा नहीं है। केवल ग्रेशिया की खातिर से और अपने अभिप्रायों को पूरा करने की इच्छा से और मि० टैम्पैस्ट को सहायता देने के उद्देश्य से वह अपने भावों को रोके हुए खड़ा रहा। और जब थोड़ी देर टहलने के बाद ग्रेशिया के समीप आया तो उसके दिल की घबराहट उसके चेहरे को देखते ही काफूर होगयी। ग्रेशिया के चेहरे से नम्रता और विनय टपक रही थी, परन्तु रैमूर के पहुंचते ही वह अत्यन्त धैर्य से कहने लगी।

ग्रेशिया — लार्ड रैमूर ! मैंने निर्णय कर लिया है।

रैमूर — हां में या ना में ?

ग्रेशिया — (मुंह फेर कर) हां में। (परन्तु ये शब्द इतने धीरे से कहे कि उसके कान तक कठिनता से पहुंचे)।

रैमूर ने अपने दिल पर हाथ रखा परन्तु तुरन्त ही हटा लिया और ग्रेशिया का हाथ पकड़ कर वह अपने होठों के पास चुम्बन के लिये ले चला। परन्तु फिर अपने को थाम करके कहने लगा —

रैमूर — मैं सोचता हूं कि तुमने बुद्धिमत्ता का निर्णय किया है और यह निर्णय एक आज्ञाकारी सन्तान को अपने पिता की प्रसन्नता के लिये करना भी चाहिये था। मैं बहुत प्रसन्न हूं और तुम्हारा कृतज्ञ हूं।

ग्रेशिया ने रैमूर के चेहरे की ओर देखा तो उसके चेहरे से ग्रेशिया का मान और प्रतिष्ठा प्रकट होती थी। परन्तु मान और प्रतिष्ठामात्र से एक नारी प्रसन्न नहीं हो सकती। ग्रेशिया को हर बात में यही ध्यान था कि इसको मुझ से प्रेम नहीं है। थोड़ी देर तक दोनों मौन रहे क्योंकि दोनों ने सौदा ही ऐसा किया था जिसमें प्रेम का नाम नहीं था। इसी बीच में रैमूर ने एक ठण्डी सांस भरी जिसको ग्रेशिया ने नहीं सुना और नां ही बेचारी ने रैमूर की स्नेहभरी दृष्टि को जो उस पर पड़ रही थी देखा और नां ही रैमूर के व्यवहार से कोई स्नेहवाली गन्ध टपकती थी। अस्तु, इस मौन को रैमूर ने ही तोड़ा —

रैमूर — क्या तुम मेरे साथ अपने पिता के पास चलोगी? मैं चाहता हूं कि वे तुम्हारे मुंह से तुम्हारी स्वीकृति के शब्द सुन लें।

यह कहकर दोनों घर की ओर रवाना हुए। ग्रेशिया चोर आंखों से रैमूर की ओर देखती जाती थी और रैमूर के दिल में वही विचार थे जो एक मरनेवाले के होने चाहियें।

वह यही विचार कर रहा था कि यह अपने आपको केवल नाममात्र को मेरे अधीन कर रही है, परन्तु नहीं, यह शीघ्र स्वतन्त्र हो जावेगी। जितनी शीघ्र स्वतंत्र हो उतना ही अच्छा है। गोल कमरे में थोडी देर ठहर कर वे पुस्तकालय में गये जहां कि मिस्टर टैम्पेस्ट बैठा हुआ था। इधर बूढे ने ~~बारी बारी से~~ घबराये हुए बारी २ से उन दोनों की ओर देखा।

रैमूर — मैंने मिस टैम्पेस्ट से प्रार्थना की है कि वह अपना संकल्प आपके चरणों में अपनी वाणी से निवेदन कर दें और वे इसी अभिप्राय से आयी हैं।

टैम्पेस्ट — क्या सब बातें समझा दी गयी हैं।

रैमूर — जी हां।

टैम्पेस्ट — ग्रेशिया! तुमने समझ लिया है, दिल से निर्णय कर लिया है और सोच लिया है?

ग्रेशिया० — (सिर हिलाकर) हां।

टैम्पे० — तुम को मालूम है इस के बिना हमारा कैसा अन्त होगा?

ग्रे० — पिता जी! मैं जानती हूं और स्वीकार करती हूं।

टै० — (संतोष पूर्वक लम्बा सांस लेकर) यह सब कुछ तुम्हारी खातिर से किया जा रहा है। जो मेरी पूछती हो तो मुझको तनिक भी ख्याल नहीं है। कितने दिन जियूंगा। आज मरा कल दूसरा दिन। अपनी आयु काफी गुजार चुका हूं और अधिक समय तक कष्ट सहने के लिये न जी सकूंगा। परन्तु तुम अपनी कहो। अभी तुम परमेश्वर की कृपा से जवान हो।

ग्रे० — पिताजी, मैं फिर निवेदन करती हूं कि मुझ को स्वीकार है।

इस बातचीत के पश्चात मिस्टर टैम्पेस्ट ने लार्ड रैमूर को इस दृष्टि से देखा कि मानों वह यह चाहता है कि रैमूर भी कुछ कहे और वह मस्तक का पसीना पोंछने लगा।

रैमूर — मि० टैम्पेस्ट ~~और~~ आप को और मिस टैम्पेस्ट साहिबा आप को यह मालूम होना चाहिये कि शादी फौरन होनी चाहिये। (ग्रेशिया को खिड़की की ओर जाता देखकर) देर लगने में खतरा है, और देर करने में कोई कारण नजर नहीं आता। जहां तक शीघ्र संभव हो हमारी शादी हो जानी चाहिये। और मुझको विश्वास है कि विशेष लाइसेन्स (आज्ञा) प्राप्त करके यह शीघ्र हो सकती है। मैं आशा करता हूं कि मैं विशेष अनुमति (लाइसेन्स आज्ञा) प्राप्त कर लूंगा।

ग्रेशिया यह सोचकर कि लार्ड रैमूर शायद मेरे पिता से कुछ विशेष वार्तालाप एकान्त में करना चाहता है, लार्ड रैमूर को और अपने पिता को कमरे में अकेला छोड़कर बाहर चली गयी और उस को जाता हुआ देखकर लार्ड रैमूर फिर कुर्सी पर बैठ गया और कहने लगा—

रैमूर — मैं इस समय कुछ अधिक कहना नहीं चाहता। केवल इतना मात्र कि अब देर न होनी चाहिये ताकि जो हमारा उद्देश्य है वह नष्ट न होजाये। मैं अपनी वसीयत तय्यार कर लूंगा और ~~शादी की~~ विवाह संस्कार पुरा होने के साथ ही हस्ताक्षर होजायेंगे। और विवाह की लिखित भी कर लूंगा। इसके अतिरिक्त मैं ऋण के हिसाब कौनपटारे का कागज़ भी लिख रखूंगा और उसपर उसी समय हस्ताक्षर कर दूंगा। क्योंकि मैं पहले ही निवेदन कर चुका हूं कि बिना शादी हुए मैं हस्ताक्षर नहीं कर सकता। नाहीं वह किसी काम के हैं और नाहीं उचित हैं, जब तक कि विवाहसंस्कार की विधि पूर्ण न होजाये।

मि० टैम्पैस्ट — (खड़े होकर धीमी आवाज़ में) मैं क्या कह सकती हूं। मैं आपकी उदारता से कृतज्ञ होचुका हूं।

रैमूर — (शोकयुक्त चिर-मुस्कराहट से) इस में कोई उदारता नहीं है। आप भूल गये मैं एक ऐसे पाजी से अपनी धनसंपत्ति को बचाना चाहता हूं जिसके वह किसी रूप में भी योग्य नहीं है। ज़रा ~~सन्तोष~~ धैर्यपूर्वक सोचिये और मिस साहिबा का ध्यान भूल जाइये। ध्यान तो करें कि इस प्रबन्ध से हम दो कुलों को नष्ट होने से बचाते हैं। जहां तक एक ओर इस बात का ध्यान है दूसरी ओर एक पवित्र निर्दोष कन्या जिसने चारों ओर मारे-मारे फिरना था वह भी विपत्ति से बच जायेगी।

टैम्पैस्ट — तुम कुछ भी कहो परन्तु मैं उपकार भूलनेवाला या अकृतज्ञ नहीं हूं। रैमूर, भगवान तुम्हारी आयु की वृद्धि करें। तुमने एक अबोध कन्या को जो अभी जुमा-जुमा आठ दिन की ही उत्पन्न हुई रहे, दारुण विपत्तियों से बचा लिया है।

रैमूर हाथ मिलाकर गोल कमरे में चला गया किन्तु ग्रेशिया वहां न मिली। इस पर उसे विचार आया कि शायद वह अपने विशिष्ट कमरे में चली गयी है। परन्तु अचानक उसे ग्रेशिया वाटिका में फिरती हुई दिखाई दी। वह भी बाहर निकलकर उसके पास पहुंचा।

रैमूर — अच्छा हुआ कि तुम मुझे मिल गयी।

ग्रेशिया — (कांपती हुई आवाज़ में) क्या पिता जी खुश हैं?

रैमूर — मेरा विचार है और आशा है कि वे खुश हैं। क्या मैं आशा कर सकता हूं कि आप तो अप्रसन्न नहीं? मुझको यह कहने का साहस नहीं है कि मैं आपको खुश कह सकूं।

किन्तु ग्रेशिया का कोई उत्तर न पाकर जो नीचे दृष्टि किये खड़ी थी, रैमूर ने कहा—

रैमूर — मैं जाता हूं। अब आपको एकान्त की आवश्यकता है। (कुछ मुसकराहट से जो

तत्क्षण ही विलुप्त भी हो गयी) अच्छा विदा होता हूं।

यह कह कर रैमूर ने कुत्ते को इशारा किया जो उसके साथ हो लिया और वह बिना हाथ मिलाये चल निकला। वह सर्वथा ठीक चाल से चलता रहा, जब तक ग्रेशिया को नज़र आता रहा। फिर खड़ा हो गया और आकाश की ओर देखकर बड़ी बेचैनी से चिल्लाने लगा। "परमात्मन! मुझे सहनशीलता और धैर्य की सामर्थ्य दे॥"

(३८)

नवम परिच्छेद

आज ग्रेशिया का विवाह है। पाठकों को लार्ड रैमूर के शब्द याद होंगे जिसने कहा था कि विवाह में देर करना हानिकारक है। अभी पांच ही दिन हुए थे कि उसने विवाह का विशेष लाइसेंस (आज्ञा) प्राप्त कर लिया। मि० हारवुड ने विवाह का प्रतिज्ञापत्र (इकरारनामा) और कागज़ात जिनके कारण मि० टैम्पेस्ट को ऋण देने से छुटकारा मिलना था और वसीयतनामा या उत्तराधिकारपत्र जिसके द्वारा कि लॉर्ड रैमूर ने अपनी सम्पूर्ण चल तथा अचल सम्पत्ति का उत्तराधिकारी मिस ग्रेशिया को निश्चित किया था, तैयार कर लिये थे। यह बात वर्णन करने के योग्य है कि शादी वाले घर में कोई तय्यारी शादी के लिये न थी। लार्ड रैमूर को अपने विषय में भय था कि तात्कालिक जोश कहीं उसको हानि न पहुंचावे। और इसी कारण से उसने मि० टैम्पेस्ट से प्रार्थना की थी कि शादी के पीछे श्रीमान मिस्टर टैम्पेस्ट और ग्रेशिया महल प्राल्टरी के स्थान पर उसके महल ग्रीनिच में दोपहर का खाना खावें। उसको ख्याल था कि शायद मैं सहार न सकूं। बीमार हो जाऊं या शायद मर जाऊं तो मेरे लिये मेरे मकान में मरना ही उचित होगा। उसने इन सभी बातों को वैसी ही गंभीरता और धैर्य से निभाया जिस गंभीरता और धैर्य से उसने ग्रेशिया से विवाह की प्रार्थना की थी। और मिस्टर हारवुड उसके इस अनोखे ढंग पर आश्चर्य कर रहा था। इस पांच दिन के समय में उसको ग्रेशिया से मिलने का अवसर बहुत कम हुआ। एक दो बार वह प्राल्टरी गया अवश्य परन्तु उन कागज़ात का मसौदा लेकर जिनको देखकर मिस्टर टैम्पेस्ट बहुत सन्तुष्ट हुआ था। मि० टैम्पेस्ट ने कहा भी कि मैं तुमको इतना तंग करना नहीं चाहता। जिसका उत्तर लार्ड रैमूर ने यही दिया कि यदि ऋण इससे दुगुना भी होता तो भी क्या चिन्ता थी। वह इन मुलाकातों में ग्रेशिया से मिला भी, परन्तु इस तरह से जैसे दो मित्र मिलते हैं। विषयवासना जनित प्रेम विषयक शब्दों का नाम भी बीच में नहीं आया।

हम पाठकों के मनोविनोद के लिये इन दोनों की मँगनी के तीसरे दिन का वृत्त जो दोनों में हुआ, यहां वर्णन करते हैं। इस दिन लार्ड रैमूर प्राल्टरी में किसी काम से गया था और ग्रेशिया को अपनी प्रतीक्षा में देख समझ गया था कि वह कुछ कहना चाहती है। बस, वह यह देखकर वहीं ठहर गया।

ग्रेशिया — (लज्जा से नीची दृष्टि करके) मैं शादी के वेश के बारे में आपसे कुछ पूछना चाहती हूं। पिता जी का विचार है कि शादी की पोशाक मंगवाली जावे किन्तु मेरा —

रैमूर — (बीच में ही) किन्तु तुम्हारा अभिप्राय विवाह के कपड़े पहनने का नहीं है।

ग्रे० — जी हां।

रैमूर — तुम सर्वथा सत्य कहती हो और मुझे तुम्हारे साथ सर्वथा सहानुभूति है क्योंकि यह विवाह अनोखे प्रकार का है। इसमें विवाह के कपड़े पहनने बिल्कुल ठीक नहीं। मेरा विचार है कि शादी वाली पोशाक न पहनो।

ग्रे० — तो फिर तुम ही बतला दो जो मैं पहनूं।

रै० — यदि तुम मेरी इच्छा पर छोड़ती हो और ऐसी दयालु हो तो लो सुन लो। मेरे विचार में तुम को वह सफेद पोशाक पहननी चाहिये जो मैंने प्रथम मुलाक़ात में पहने हुए देखा था।

ग्रे० — क्या मैं उस दिन श्वेत वस्त्र पहने हुए थी?

रै० — (एक ठण्डी सांस लेकर जिस पर ग्रेशिया ने उस को देखा) मुझको खूब याद है कि वे श्वेत वस्त्र थे।

ग्रे० — बहुत अच्छा, फिर मैं वही कपड़े पहन लूंगी।

रै० — (धन्यवाद देते हुए सा) तुम मुझ पर बहुत कृपा दिखाती हो।

ग्रे० — यह तो एक साधारण सी बात है। लार्ड रैमूर ध्यान तो करो तुमने हमारी दशा पर कितनी कृपा और कितना त्याग किया है।

रै० — हे भगवान! तुम मुझे कभी मेरे जन्म नाम "रौल्फ" से भी पुकारोगी, या लार्ड रैमूर लार्ड रैमूर ही कहा करोगी।

ग्रे० — (कुछ पीली पड़कर) मेरा ख्याल है कि शायद मैं न पुकार सकूं। दूसरी बात यह है कि तुम भी मुझ को मिस टैम्पैस्ट ही कहते रहते हो।

रै० — अच्छा तो आओ एक फैसला करलें। मैं तुम्हें ग्रेशिया कहा करूं और तुम मुझे रौल्फ कहा करो।

ग्रे० — (बिना रौल्फ कहे) सिर आंखों पर।

रौल्फ का नाम ग्रेशिया की वाणी से न सुनकर रैमूर बिना शेष वार्तालाप किये चल खड़ा हुआ और दिल में अत्यन्त बेचैन था और कहता था कि वह अवश्य मुझ से घृणा करती होगी।

पाठकों से इस समय इस समयनाश की क्षमा मांगते हुए हम फिर अपने प्रसंग पर आते हैं। आज ग्रेशिया ने सादी गाऊन पहनी है। वह दर्पण के सामने खड़ी हुई है और वही टोपी पहन रही है जो कि उस ने लार्ड अर्थात् आगामि होनेवाले पति से प्रथम भेंट में पहनी थी। उसको यह सारी बातें स्वप्नवत् प्रतीत हो रही थीं। यद्यपि उस का चेहरा हल्दी जैसा पीला पड़ा हुआ था। परन्तु उस को शान्त देखकर आश्चर्य सा होता था। मिस्टर टैम्पेस्ट गोल कमरे में अपने विचारों में मग्न टहल रहा था और ग्रेशिया की प्रतीक्षा कर रहा था।

ज्योंही ग्रेशिया अपने दस्तानों के बटन लगाती हुई आई तो मि० टैम्पेस्ट ने आश्चर्य से फटे-फटे नेत्रों से उसकी ओर देखा। ग्रेशिया के आग्रह पर कि पैदल चलना चाहिये, कहने लगा —

मि० टैम्पेस्ट — क्या तुम गिरजाघर तक पैदल चल सकोगी, तुम्हें भरोसा है?

ग्रे० — जी हाँ पिता जी! मुझ को भरोसा है।

टै० — पुत्री कुछ मद्य या और कोई इसी प्रकार की वस्तु पीलो क्योंकि तुमने एक बड़ी परीक्षा में पूरा उतरना है।

ग्रे० — मुझको किसी मद्य वद्य की आवश्यकता नहीं है। मैं सब भुगत लूंगी। पिता जी! आप इतना परेशान क्यों हैं?

टै० — (धीरज को कठिनता से संभालकर) ग्रेशिया, अभी सोच लो पर्याप्त समय है। ~~फिर पछताये होत क्या जब~~ का वर्षा जब कृषि सुखाने / समय चूकि पुनि का पछताने / प्राण जायें पर वचन न जाहि

ग्रे० — पिता जी! जान चाहे जावे पर वचन न जाये। अब समय बीत चुका है।

टै० — (अपने को धिक्कारते हुए) बेटी! तुम जानती हो तुम क्या करने लगी हो। भगवान के नाम से दुविधा में मत पड़ो। यदि तुमको ख्याल है कि तुमको पछताना पड़ेगा तो रुक जाओ। नहीं तो फिर पछताए क्या होत है जब चिड़ियां चुग गईं खेत।

ग्रे० — (बात को दूसरी ओर डालकर) पिताजी! देखो आने में हमको देर तो नहीं होगई?

यह कहकर उस ने गोल कमरे की घड़ी को देखा और पिता के कंधों पर सहारा देकर इस तरह से रवाना हुई मानो इस समय सहारे की इच्छुक थी। सड़क पर से धीरे २ गुजरकर और फाटक पर पहुंचकर अपने महल को देखा और महल को संबोधन करके दिल में कहा — मेरे पूर्वजों के प्यारे प्रासाद! मैं तुम्हें बचाने को वध्यभूमि को जाती हूं।

---

*। अंग्रेजी समाज में यह रीति है कि एक नाम तो खानदान का होता है दूसरा जैसे रोल्फ का जन्म के समय रखा जाता है। अन्य साधारण लोग तथा अपरिचित लोग तो खानदान का नाम लेकर ही पुकारेंगे। परन्तु निकटवर्ती रिश्तेदार माता, पिता, भाई बहन पत्नी आदि प्यार के लिये तथा समीप के मित्र संबंधी जन्म नाम ही लेकर पुकारेंगे। यही इशारा लार्ड रैमूर ने भी किया था। अभिप्राय यह था कि ग्रेशिया भी कभी बनावट छोड़ेगी या नहीं। [illegible] पुकारकर [illegible] ॥ अनुवादक ॥

मि० टैम्पैस्ट इन्हीं विचारों में मग्न था और उसके दिल में भी "बच गये बच गये" के विचार आ रहे थे। दोनों पगडण्डी के रास्ते से गिरजाघर पहुंच गये। लार्ड रैमूर और मि० हारवुड को गिरजे के बरामदे में खड़े हुए देखा। ग्रेशिया ने देखा कि लार्ड रैमूर ने वही कपड़े पहने हुए हैं जो प्रथम २ परिचय के दिन जंगल में पहने था। फिर दोनों स्वागत को आगे बढ़े। लार्ड रैमूर ने ग्रेशिया के हाथ में हाथ दिया और मि० हारवुड ने अनुभव किया कि शादी क्या है, अच्छा खासा जनाजा (मृत शव को) ले जाने का सा सामान है। ग्रेशिया के चेहरे से एक असाधारण सन्तोष टपक रहा था और बुड्ढे मि० टैम्पेस्ट के चेहरे से घबराहट टपकी पड़ती थी।

मि० हारवुड — (ग्रेशिया से बातचीत आरंभ करने की इच्छा से) मैं प्रथम सौभाग्यशाली पुरुष हूं जो आप का स्वागत कर रहा हूं। परमात्मा आप को सदा आनन्द प्रसन्न रखे कैसा सुन्दर प्रात:काल का सुहावना समय है। यद्यपि वह एक पुरानी कहावत है परन्तु समयानुकूल ठीक है अर्थात वह दुलहिन अत्यन्त खुश रहती है जिस के सिर पर सूरज चमके।

ज्योंही ये लोग गिरजा में प्रविष्ट हुए, ग्रेशिया अपने पिता के समीप हो गयी और दोनों राह-राह पादरी साहब की मेज़ की ओर बढ़े और लार्ड रैमूर और मि० हारवुड भी साथ २ पहुंच गये और शादी की रस्में आरंभ हो गयीं।

लार्ड रैमूर सीधा खड़ा हुआ था और उस की दृष्टि वधभूमि की ओर लगी हुई थी। केवल एक बार उस को कुछ घबराहट और बेचैनी सी अनुभव हुई। उस समय जब कि उसने ग्रेशिया का हाथ पकड़ कर शादी की अंगूठी उंगली में पहनाई। उस समय उसने ग्रेशिया के चेहरे की ओर देखा तो मालूम हुआ कि उस की अवस्था मूर्च्छित की सी हुई २ है। बस, वह ग्रेशिया के और समीप हो गया। परन्तु ग्रेशिया तुरन्त ही संभल गयी। रस्में पूर्ण हो चुकीं। ग्रेशिया मिस से मेम बन गयी। मनुष्य और परमेश्वर दोनों के समीप अब ग्रेशिया पति-पत्नी थे।

रैमूर अपनी पत्नी को लेकर दूसरे कमरे में गया जहां पर कि बूढे पादरी ने जो कि मि० टैम्पेस्ट का अच्छा परिचित था बधाई दी। लार्ड रैमूर ने रजिस्टर पर लिखना आरंभ किया और अपने हस्ताक्षर कर दिये। इस अन्तर में ग्रेशिया खड़ी हुई रैमूर के चेहरे के अतिरिक्त और किसी वस्तु की ओर ध्यान न दे रही थी। वह यह सोच रही थी कि क्या रैमूर मेरी मूर्च्छा पर चिन्तित है या मुझको उसकी अवस्था पर दया आती है। रैमूर हस्ताक्षर करने के बाद ग्रेशिया को मेज़ की ओर ले गया तो पादरी साहब ने मज़ाक के तौर पर ग्रेशिया से कहा कि लेडी साहिबा, आप को अन्तिम बार अपना पैतृक नाम कहना पड़ेगा। कृपा करके ज़रा साफ़ कहना। देखने में आया है कि [illegible] अवसरों पर [illegible] जैसे हुआ करते हैं। परन्तु ग्रेशिया ने ऐसी ही स्पष्टता से किये जैसे वह किया करती थी। उसको ये

बातें स्वप्न सी दिखाई दे रहीं थीं।

एक गाड़ी रैमूर की बाहर खड़ी हुई थी। अवसर के अनुसार दो तीन गाड़ियां तो कम से कम होतीं। परन्तु रैमूर की इच्छा थी कि मि० हारवुड और मि० टैम्पेस्ट भी उसी गाड़ी में सवार हों। उसको अपने ऊपर जरा सा भी विश्वास न था और सोचता था कि उसकी ओर से कोई ऐसी चेष्टा न हो जाय जिससे उसके हार्दिक प्रेम का प्रकाश हो। ग्रेशिया की आस्तीन जिस समय रैमूर के शरीर से छुई, रैमूर का दिल उछलने लगा। यद्यपि रिवाज और नियम के बंधन से ग्रेशिया उसकी संपत्ति थी, परन्तु वह विचार करता था कि हाय शोक! वह इस अमृत से वञ्चित ही रहेगा।

सारे रास्ते मि० हारवुड वार्तालाप करता रहा। सौभाग्य से रास्ता छोटा था। गाड़ी ग्रीनिच के द्वार पर आकर खड़ी होगई। सेवक लोग स्वागत को आगे बढ़े। वे चारों गाड़ी से उतरकर कमरे में चले गये। रैमूर ने ग्रेशिया को अपने हाथ का सहारा भी न दिया। परन्तु सीधा खाने के कमरे में ले गया। थोड़ी देर ठहरने के पीछे ग्रेशिया को मालकिन मकान की कुरसी पर प्रतिष्ठापूर्वक बिठाया गया और खाना प्रारंभ हो गया। यह कहना अनुचित न होगा कि यह निमंत्रण शादी का तो प्रतीत न होता था प्रत्युत ऐसा प्रतीत होता था कि मृत्यु के बाद की दावत खायी जा रही है। ग्रेशिया को भूख न थी और नां ही वह मि० हारवुड की वार्तालाप को जो उसी प्रकार बोल रहा था सुन रही थी। उसका दिल धड़क रहा था।

खाने के बाद मि० हारवुड, लार्ड रैमूर और मि० टैम्पेस्ट समयानुकूल बातचीत करते रहे। एक दो बार तो ग्रेशिया ने अपने पति की ओर आंख उठाकर भी देखा तो उसे पाया कि वह टिकटिकी बांधे उसके चेहरे को देख रहा है। परन्तु ग्रेशिया उसकी दृष्टि को कि क्या वह प्रेम की है या किस प्रकार की अन्दाजा न लगा सकी। जिस समय आंखें मिलती थी, दोनों अपनी २ आंखें हटा लेते थे और रैमूर कभी हारवुड और कभी टैम्पेस्ट से वार्तालाप करने लग जाता था। कभी ऋतु का वर्णन करने लगता था तो कभी शिकार का। मकान क्या था ठीक शोक का कमरा था। न किसी टोस्ट का प्रस्ताव हुआ न ही दुलहा दुलहिन के आरोग्य का प्याला ही पिया गया। हां टिफ़न चारों ने मिलकर खा लिया। टिफ़न के अन्त में मि० हारवुड ने अपनी घड़ी को देखा। रैमूर ने इस रहस्य को समझ लिया और ग्रेशिया की ओर अभिप्राय भरी दृष्टि से देखकर कहा।

रैमूर— क्या हम को थोड़ी देर के लिये पुस्तकालय में जाने की आज्ञा है। तुम भी चलो।

यह सुनकर ग्रेशिया खड़ी होगयी और लार्ड रैमूर उसके साथ हो लिया। सब मिलकर पुस्तकालय में गये और लार्ड रैमूर ने एक आरामकुर्सी पर ग्रेशिया को बिठा दिया। फिर मि० हारवुड ने दस्तावेज निकालकर पेश की और पूछा—

मि० हारवुड— लेडी [illegible] कहें तो मैं इसको पढ़कर सुनादूं।

रैमूर—(ग्रेशिया की ओर देखकर) क्या इन का पढ़ना आवश्यक है। क्या आवश्यकता है?

हारवुड—बहुत अच्छा, लीजिये यह विवाह-पत्र है, यह वसीयतनामा है और यह दस्तावेज़ वह है जिस के कारण से मि० टैम्पेस्ट के ऋण का उत्तरदायित्व और छुटकारा हो जाता है। (लार्ड रैमूर से) लीजिये हस्ताक्षर कीजिये।

रैमूर—(हस्ताक्षर करके) मैं अनुगृहीत हूं।

मि० हारवुड—(ग्रेशिया से) लेडी साहिबा! कृपा करके आप भी हस्ताक्षर कीजिये।

ग्रेशिया ने निस्संकोच भाव से झट स्वच्छ अक्षरों में हस्ताक्षर कर दिये। इसी प्रकार मि० टैम्पेस्ट ने भी प्रार्थना किये जाने पर हस्ताक्षर कर दिये। किन्तु बूढे आदमी को हस्ताक्षर करते हुए कुछ समय गुज़रा और यह पहला अवसर था कि ग्रेशिया की आंखें डबडबा आयीं।

मि० हारवुड—(दस्तावेज़ को संभालकर) मैं आप सब सज्जनों और लेडी साहिबा का अनुगृहीत हूं। मि० टैम्पेस्ट वसीयतनामा तो मेरे पास रहेगा और ये दोनों दस्तावेज़ात (लिखित पत्र) आप ले जा सकते हैं।

मि० टैम्पैस्ट—(शेष दोनों दस्तावेज़ों को मि० हारवुड की ओर करके) कृपा करके इन को भी आप अपने पास ही रखें।

मि० हारवुड—(दस्तावेज़ों को लेकर) बहुत अच्छी बात। ये मेरे पास ऐसे ही सुरक्षित रहेंगे जैसे आप के पास में। और क्योंकि मैंने एक पुरुष से मिलने का वचन दिया हुआ है, और समय हो गया है, इसलिये मैं क्षमा चाहता हूं। अलविदा लेडी साहिबा!

यह कहकर मि० हारवुड ने अपनी टोपी पहनी और हाथ मिलाकर चल दिया। इस के जाने के पश्चात् फिर वही मौन छा गया।

लार्ड रैमूर—(कुछ देर पश्चात्) चलो बाग़ में चलें या गोल कमरे में बैठने की सलाह है।

मि० टैम्पेस्ट—(खड़े होकर) अब हम घर जाना चाहते हैं। मैं अपनी टोपी ले आऊं।

यह कहकर मि० टैम्पैस्ट अपनी टोपी लेने चला गया। अब ग्रेशिया और लार्ड रैमूर अर्थात् पति पत्नी दोनों अकेले रह गये। रैमूर खड़े होकर ग्रेशिया के समीप चला गया और उसकी कुर्सी पर हाथ रखकर खड़ा हो गया।

रैमूर—मैं यत्न करता हूं कि आपको धन्यवाद दूं क्योंकि यह लोकोक्ति है कि जो दिल में होता है वह वाणी पर आ जाता है (यन्मनसा मनुते तद्वाचा वदति) परन्तु मेरा दिल धन्यवाद, आदर और सहानुभूति से भरा हुआ है। हाय शोक कि नौजवान के मुंह से धन्य[illegible]

INFORMATION OFFICE
EMBASSY OF THE PEOPLE'S REPUBLIC OF CHINA
NEW DELHI

19-N-H-57 The Editor,
'Ajanta', (H)
Hyderabad Rajya Hindi
Prachar Sabha, Nampalli
Station Road, Hyderabad-Dn.

यह कापी नं. १ [illegible]
[illegible]
१२-२-४८
[illegible]